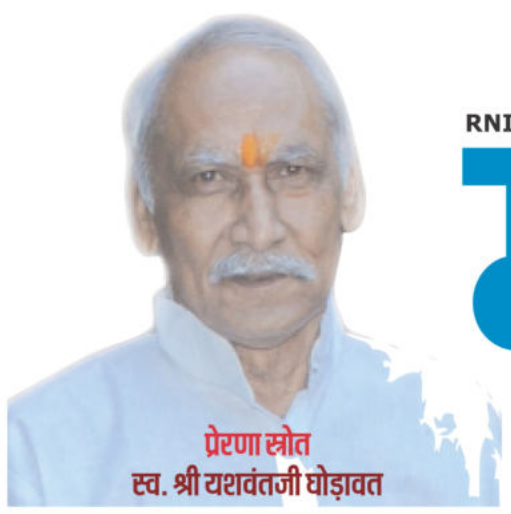

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ..सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

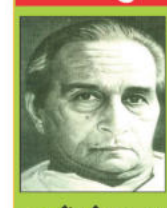

प्रजातंत्र में सबसे बड़ा दोष है तो यह कि उसमें योग्यता को मान्यता नहीं मिलती, लोकप्रियता को मिलती है।

हरिशंकर परसाई

वर्ष-06, अंक - 21 (साप्ताहिक) | खवासा, गुरुवार 15 फरवरी 2024 | पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

क्या झाबुआ के मतदाता मोदी की गारंटी पर विश्वास करेंगे...?

माही की गूंज, संजय भटेवरा

झाबुआ। लगभग तीन माह पूर्व हुए विधानसभा चुनाव में झाबुआ जिला मुख्यालय पर प्रधानमंत्री मोदी की एक बड़ी आम सभा के बावजूद जिला मुख्यालय की सीट पर भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। यही नहीं जिले की तीन में से दो सीट पर कांग्रेस ने अपना कब्जा बरकरार रखा। यही हाल स्मीपस्थ धार जिले में भी रहा वहां पर भी लोगों ने मोदी की गारंटी पर कांग्रेस के वचन को तहरीज दी और प्रदेश के मूड के विपरीत अपना मूड दर्शाया। शायद इसी कमजोरी की कड़ी को देखते हुए मोदी ने लोकसभा चुनाव का आगाज यहां से करने का निर्णय लिया। लेकिन क्या मोदी इसमें सफल हो पाएंगें..? यह तो चुनाव परिणाम के बाद ही पता लगेगा। लेकिन देश के प्रधानमंत्री के रूप में यहां की जनता ने मोदी को भरपुर प्यार दिया और ऐतिहासिक स्वागत किया।

अबकी बार 400 पार...

कहते हैं कि दूध का जला छाछ भी फूंक फूंक कर पीता है। भाजपा ने 2018 में मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल में पिछले विधानसभा चुनाव में अबकी बार.... 200 पार का नारा दिया था लेकिन उस नारे का हश्र क्या हुआ था यह सभी को पता है। मध्य प्रदेश में तो सरकार ही नहीं बन पाई थी और पश्चिम बंगाल में ममता दीदी ने बड़ा खेल करते हुए भाजपा को 100के अंदर सीमित कर दिया था। जिससे सबक लेकर भाजपा ने 2023 के मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में सीट के संबंध में कोई दावा नहीं किया था और विधानसभा चुनाव एक बड़े अंतर के साथ जीत कर सरकार बनाई। लेकिन लोकसभा चुनाव में एक बार फिर मोदी ने नया नारा उछाला है ''अबकी बार एनडीए 400 पार'' व भाजपा के लिए 370 सीट का लक्ष्य रखा गया है। अब यह लक्ष्य कहां तक पहुंचता है यह तो परिणाम ही तय करेंगे।

आत्मविश्वासी सरकार V/S हताश विपक्ष

आमतौर पर चुनाव के पूर्व कोई भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता है नेता जरूर अपनी-अपनी पार्टी के लिए जीत का दावा करते हैं। लेकिन इस चुनाव में एक नई बात देखने को मिल रही है इसमें सरकार तो आत्मविश्वास से परिपूर्ण नजर आ रही है। वहीं विपक्ष हताश और मायूस नजर आ रहा है। पहली बार देखने को मिल रहा है कि, एंटी इनकम्बेसी (सरकार विरोधी लहर) की जगह प्रो इनकम्बेसी(सरकार के पक्ष में माहौल) दिखाई दे रहा है। विपक्ष की ओर से एक बड़ा गठबंधन (I.N.D.I.A) बनाने की घोषणा बड़े जोर शोर से की गई थी। लेकिन समय के साथ-साथ इस गठबंधन के नेता इसे डूबता हुआ जहांज बतला कर इससे उतर रहे हैं। यहां तक कि इस गठबंधन के लिए पहल करने वाले नीतीश कुमार पाला बदलकर राजग के खेमे में जाकर बैठ गए हैं।

ममता दीदी पश्चिम बंगाल में और आम आदमी पार्टी दिल्ली में और पंजाब में कांग्रेस के लिए कुछ विशेष छोड़ने के मूड में नहीं है। वही दक्षिण के राज्य भी समय-समय पर कांग्रेस को आंखें दिखाने से परहेज नहीं कर रहे हैं। ऐसे में विपक्षी एकता की यह कोशिश कितना रंग लाती है यह तो इंडिया गठबंधन के सीट पर बटवारे के फैसले के बाद ही पता चलेगा। लेकिन विपक्षी गठबंधन के लिहाज से देखें तो इस समय इनके लिए अभी तक कुछ ठीक नहीं हो रहा है आए दिन इनके नेताओं कि पाला बदलने की खबरें आ रही है। ऐसे में आत्मविश्वासी सरकार और हताश विपक्ष के बीच कैसा मुकाबला होना है यह समय बतलाएगा।

राज्यसभा जाने की तैयारी कर रहे कमलनाथ...?

भोपाल। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कमलनाथ अप्रैल में राज्यसभा जा सकते हैं। दरअसल 2 अप्रैल को राज्यसभा की 5 सीटें खाली हो रही हैं, इनमें से 4 भाजपा को तो एक कांग्रेस को मिलनी है। माना जा रहा है कि, ये सीट कमलनाथ को मिल सकती है। उन्होंने 9 फरवरी को सोनिया गांधी से मुलाकात की थी। सूत्रों का कहना है कि, इस दौरान कमलनाथ ने सोनिया गांधी से राज्यसभा की सीट मांगी है। ये खबर ऐसे समय में सामने आई है जब हाल ही में उन्होंने ऐलान किया था कि उनके बेटे नकुलनाथ लोकसभा चुनाव के लिए छिंदवाड़ा से चुनाव लड़ेंगे।

13 फरवरी को अपने आवास पर सभी कांग्रेस विधायकों के लिए डिनर का आयोजन किया है। पार्टी सूत्रों ने कहा कि, वह नामांकन के पहले दिन 15 फरवरी को राज्यसभा चुनाव के लिए अपना पर्चा दाखिल करेंगे। बता दें, कमलनाथ ने मध्य प्रदेश में 2018 विधानसभा चुनाव से छह महीने पहले पार्टी की कमान संभाली थी। कांग्रेस बहुमत से थोड़ी दूर रह गई लेकिन सहयोगियों की मदद से सरकार बनाई और कमलनाथ सीएम बने।

इसके बाद कांग्रेस के पंद्रह महीने के कार्यकाल के बाद, ज्योतिरादित्य सिंधिया ने विद्रोह कर दिया और भाजपा में चले गए। इसके चलते कमलनाथ सरकार गिर गई और भाजपा को एक बार फिर सरकार बनाने का मौका मिला। इसके बाद 2023 के विधानसभा चुनावों में भी कमलनाथ को सीएम के तौर पर दर्शाया गया लेकिन भाजपा ने 230 में से 163 सीटें जीतकर चुनाव में जीत हासिल की। कांग्रेस 66 पर सिमट गई।

ईडी को देखते ही खिड़की से फेंके मोबाइल फोन

कोलकाता, एजेंसी।

ईडी यानी प्रवर्तन निदेशालय की छापेमारी से घबराए कारोबारी ने खिड़की से ही मोबाइल फोन फेंकना शुरू कर दिए। मामला पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता का बताया जा रहा है, जहां दो अलग-अलग मामलों में ईडी ने रेड की हैं। इस दौरान केंद्रीय जांच एजेंसी ने राशन घोटाले के आरोपी कहे जा रहे शंकर आध्या के करीबी के घर पर छापेमारी की।

ईडी ने कोलकाता में 8 ठिकानों पर रेड की थी। इनमें एक वीआईपी रोड स्थित हल्दीराम इलाका भई शामिल है। यहां जब ईडी पहुंची, तो कारोबारी ने खिड़की के बाहर फोन फेंक दिए। खबर है कि पास ही रहने वाले एक शख्स ने अधिकारियों को जानकारी दी, तब इस घटना का पता चल सका।

पड़ोसी की तरफ से मिली 'कुछ फेंके' जाने की जानकारी के बाद अधिकारी हरकत में आए। दरअसल, खिड़की से फेंके जाने के बाद फोन पास की बिल्डिंग के टैरेस पर गिर गए थे। इसके बाद अधिकारी छत पर पहुंचे और फोन को अपने कब्जे में लिया।

पुलिस ने किए ईडी अधिकारियों से सवाल

राशन घोटाले को लेकर ईडी साल्ट लेट आईबी ब्लॉक में रहने वाले कारोबारी विश्वजीत दास के घर भी पहुंची थी। रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारी जैसे ही घर में पहुंचे, तो विधाननगर पुलिस ने आकर अधिकारियों से जानकारी लेना शुरू कर दिया। रिपोर्ट के अनुसार, एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि उनके पास रेड को लेकर कोई जानकारी नहीं है। चर्चा के बीच एक ईडी अधिकारी ने बताया कि, पुलिस को सुबह ही ई-मेल के जरिए सूचित कर दिया था। दस एडी फॉरेक्स प्राइवेट लिमिटेड में डायरेक्टर हैं और उन्हें आध्या का करीबी माना जाता है।

बदरीनाथ धाम में 12 मई से श्रद्धालु कर सकेंगे दर्शन

देहरादून।

उत्तराखंड चारधाम यात्रा के लिए तैयारियां शुरू हो गईं हैं। बदरीनाथ धाम के कपाट खुलने की तारीख तय हो गई है। बदरीनाथ धाम के कपाट 12 मई को ब्रह्ममुहुर्त प्रातः 6 बजे खुलेंगे। बसंत पंचमी के अवसर पर नरेंद्रनगर (टिहरी) स्थित राजदरबार में कपाट खुलने की तारीख घोषित की गई। जबकि, केदारनाथ धाम के कपाट खुलने की तारीख शुक्रवार 8 मार्च शिवरात्रि के अवसर पर तय होगी। गंगोत्री-यमुनोत्री धाम के कपाट अक्षय तृतीया के दिन खोले जाएंगे। बीकेटीसी मीडिया प्रभारी डॉ. हरीश गौड़ ने बताया बदरीनाथ धाम के कपाट खुलने की तारीख परंपरागत रूप से राजमहल नरेंद्र नगर में तय हुई।

बसंत पंचमी के दिन बुधवार सुबह को धार्मिक समारोह शुरू होने के साथ ही पूजा-अर्चना, पंचाग गणना के बाद धाम के कपाट खोलने की तारीख का ऐलान किया गया। तेल-कलश यात्रा की भी तिथि 25 अप्रैल को तय हुई। केदारनाथ धाम के कपाट खोलने की तारीख 8 मार्च को शिवरात्रि के दिन तय होगी।

पंच केदार गद्दस्थल श्री ओकारेश्वर मंदिर उखीमठ(रूद्रप्रयाग) में विधि-विधान पंचांग गणना के बाद कपाट खोलने की तारीख का ऐलान होगा। इसी दिन श्री केदारनाथ भगवान के पंचमुखी भोगमूर्ति के केदारनाथ धाम प्रस्थान का भी कार्यक्रम तय हो जायेगा। इस वर्ष अक्षय तृतीया शुक्रवार 10 मई को है परंपरागत रूप से गंगोत्री एवं यमुनोत्री धाम के कपाट अक्षय तृतीया को खुलते है।

अप्रैल माह में श्री गंगोत्री मंदिर समिति एवं श्री यमुनोत्री मंदिर समिति श्री गंगोत्री एवं यमुनोत्री धाम के विधिवत कपाट खुलने की तिथि एवं समय का ऐलान करेंगे। चारधाम यात्रा के शुरू होने से पहले ही प्रशासन ने तैयारियां शुरू कर दीं हैं। सड़कों के ठीक करने के साथ ही बुनियादी सुविधाओं का सुदृढ़ किया जा रहा है।

एम्स का नया प्रयोगः ड्रोन की मदद से 40 किमी दूर पहुंचाईं दवाइयां

भोपाल। राजधानी भोपाल में स्थित एम्स में बुधवार को नए प्रयोग की शुरुआत की है। इस प्रयोग के तहत एम्स ने ड्रोन का उपयोग मानव सेवा के लिए किया है। इसका सफल ट्रायल भी हुआ। भोपाल एम्स की छत से रायसेन जिले के गौहरगंज 40 किलोमीटर दूर ड्रोन भेजा गया। ड्रोन कुछ जरुरी दवाई लेकर पहुंचा। भोपाल स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के छत पर खड़े इस ड्रोन में ड्रोन दीदी ने मेडिकल के कुछ सामान एक बक्से में रखे।

इस बक्से का वजन लगभग पांच किलो तक होगा। सभी जरुरी सामान रखने के बाद ड्रोन को उड़ाने के लिए इंजीनियर ने काउंटडाउन शुरू किया और पांच, चार, तीन, दो, एक बोलते ही ड्रोन उड़ चला। फिर ड्रोन रायसेन जिले के 40 किलोमीटर दूर गोहरगंज प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पहुंचा। ड्रोन महज 20 मिनट में 40 किमी दूर गोहरगंज पहुंच गया। गोहरगंज में दस मिनट बाद वापस इस ड्रोन को भोपाल एम्स के लिए रवाना किया गया। गोहरगंज पहुंचने पर ड्रोन में वापस कुछ दवाई रखी गई, जिनका वजन लगभग पांच किलो ही था।

स्वास्थ्य से संबंधित मानव सेवा के लिए ड्रोन का पहला प्रयोग ऋषिकेश एम्स द्वारा किया गया था। इसके बाद राजधानी भोपाल में स्थित एम्स ने इसकी शुरुआत की है। एम्स भोपाल द्वारा इसके लिए ड्रोन ऑपरेटर्स को दिल्ली में विशेष ट्रेनिंग दी गई है। भोपाल एम्स प्रबंधन ने एम्स की छत पर इसके लिए पूरा मैकेनिज्म तैयार कर इसे जल्द व्यापक रूप से शुरू करने का दावा किया जा रहा है।

पति का अपनी मां को समय और पैसा देना घरेलू हिंसा नहीं

मुंबई, एजेंसी।

'एक पति द्वारा अपनी मां को समय और पैसा देना घरेलू हिंसा नहीं माना जा सकता है।' सत्र अदालत ने मजिस्ट्रेट अदालत के आदेश को चुनौती देने वाली एक महिला की याचिका खारिज कर दी है। दरअसल, महिला ने महिलाओं की सुरक्षा अधिनियम के तहत एक मजिस्ट्रेट अदालत के समक्ष शिकायत दर्ज कराई कि उसके पति ने अपनी मां की मानसिक बीमारी की बात छिपाकर और उसे धोखा देकर उससे शादी की है। महिला मंत्रालय (राज्य सचिवालय) में सहायक के रूप में काम करती है और उसने मौद्रिक राहत और मुआवजे की मांग की है। महिला ने यह भी दावा किया कि उसकी सास उसे नौकरी करने से रोकती थी और उसे परेशान करती थी। वहीं, पति और उसकी मां उससे झगड़ते थे।

इस पर फैसला सुनाते हुए अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश दिंडोशी अदालत आशीष अयाचित ने मंगलवार को पारित आदेश में कहा कि, उत्तरदाताओं के खिलाफ आरोप अस्पष्ट और संदिग्ध हैं और यह साबित करने के लिए कुछ भी नहीं है कि उन्होंने आवेदक महिला पर घरेलू हिंसा की।

महिला ने बताया कि, उसका पति सितंबर 1993 से दिसंबर 2004 तक अपनी नौकरी के लिए विदेश में रहे। जब भी वह छुट्टी पर भारत आते थे, तो अपनी मां से मिलने जाते थे और उन्हें हर साल 10 हजार रुपये भेजते थे। महिला ने कहा, उसने अपनी मां की आंख के ऑपरेशन के लिए भी पैसे खर्च किए। उसने अपने ससुराल के अन्य सदस्यों द्वारा उत्पीड़न का भी दावा किया।

अब रेलवे ट्रैक भी जाम करेंगे किसान

नई दिल्ली।

स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट लागू करने, एमएसपी पर गारंटी, लखीमपुर खीरी हादसे पर सख्त कार्रवाई करने जैसी कई मांगों को लेकर किसान फिर केंद्र सरकार से टकराव के मूड में हैं। केंद्र सरकार से दो बार की वार्ता विफल होने के बाद संयुक्त किसान मोर्चा (गैर राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा ने मंगलवार को दिल्ली कूच का ऐलान किया था। मंगलवार को पंजाब से दिल्ली की ओर कूच रहे किसानों का आंदोलन हिंसक रूप अख्तियार कर लिया है। पुलिस के साथ झड़प में अब तक सैकड़ों प्रदर्शनकारी और पुलिस घायल हो चुके हैं।

मंगलवार को शंभू और खनौरी बॉर्डर पर आंदलनोकारी किसान पुलिस से भिड़ गए। हरियाणा पुलिस की बैरिकेडिंग और तारबाड़ के साथ नुकीले सीमेंटेट अवरोध हटाने पर पुलिस ने किसानों पर पानी की बौछार की। इसके साथ ही आंसू गैस के गोले भी दागे। शंभू बॉर्डर पर हुए उपद्रव में डीएसपी आधा दर्जन पुलिसकर्मियों के साथ कई किसान भी घायल हो गए। शंभू बॉर्डर पर जमे किसान आज फिर दिल्ली कूच की कोशिश करेंगे। हालांकि, उन्हें रोकने के लिए पुलिस ने पूरी व्यवस्था कर रखी है।

किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल ने कहा कि, वे फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी सहित अपनी विभिन्न मांगों को लेकर केंद्र के साथ बातचीत के लिए तैयार हैं। न्यूज़ एजेंसी ने बताया कि, केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने अपने बयान में कहा है कि केंद्र किसानों के साथ बातचीत के लिए तैयार है और किसानों के मुद्दों को हल करने के लिए भी तैयार है।

अंबाला के पास शंभू सीमा पर प्रदर्शनकारी भीड़ को तितर-बितर करने के लिए हरियाणा पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागे। पंजाब के प्रदर्शनकारी किसानों ने विभिन्न मांगों को लेकर 'दिल्ली चलो' मार्च के तहत हरियाणा की सीमा पर बैरिकेड हटाने का नये सिरे से प्रयास किया। किसान नेता शंभू सीमा पर बहुस्तरीय बैरिकेड हटाकर 'दिल्ली कूच' की अपनी योजना पर आगे बढ़ने से पहले एक बैठक करेंगे। किसानों पर हुए लाठीचार्ज के विरोध में भारतीय किसान यूनियन ने बड़ा ऐलान किया है। पंजाब में रेलवे ट्रैक जाम करने की घोषणा की गई है। गुरुवार दोपहर 12 बजे से ट्रैक जाम करने का ऐलान किसानों ने किया है। इससे सरकार की मुश्किलें और बढ़ सकती हैं।

15 हजार रुपए प्रतिमाह का लालच देकर फर्जी बैंक खाते खुलवाए, गिरोह का ऑफि मैनेजर गिरफ्तार

माही की गूंज, रतलाम।

दुकानों पर काम करने, सब्जी बेचने व मजदूरी करने वाले आम लोगों के नाम से फर्जी बैंक खाते व फर्जी कंपनी बनाकर रुपयों का लेनदेन करने वाले गिरोह के एक और सदस्य आरोपित 28 वर्षीय बद्रीविशाल शर्मा निवासी ग्राम कलियास थाना आसींद जिला भीलवाड़ा (राजस्थान) को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। वह गिरोह के मुंबई में स्थित आफिस का मैनेजर था। पुलिस गिरोह के अन्य आरोपितों की तलाश कर रही है।

यह है मामला

उल्लेखनीय है कि, आरोपितों ने शहर के चार व्यक्तियों को 15-15 हजार रुपये माह देने का लालच देकर उनके नाम से अलग-अलग बैंकों में नौ खाते खुलवाकर उनके नाम से कंपनियां भी बनाई थी। उनके नाम व कंपनी के खातों में पचास करोड़ रुपये का लेनदेन किया गया था। एक खाताधारी फरियादी सूरज चौरे पुत्र रामकिशोर चौरे निवासी इंदौर हालमुकाम स्थानीय नीमचौक ने उसके नाम से खुलवाए गए खाते में गड़बड़ी होने की शंका होने पर उसने बैंक जाकर जानकारी ली थी तो पता चला कि डेढ माह में उसके खाते में कराड़ों रुपये का लेनदेन हुआ था, जबकि उसने कोई लेनदेन नहीं किया था। इसके बाद उसने औद्योगिक क्षेत्र थाने में 29 जनवरी 2024 को रिपोर्ट की थी।

आरोपित को 31 जनवरी को न्यायालय में पेश किया था

पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर खाते खुलवाने व कंपनी बनवाने के आरोप में 26 वर्षीय तुलसीराम ओझा पुत्र गोपाललाल ओझा निवासी सदर बाजार सरेरी थाना आसींद जिला भीलवाड़ा (राजस्थान), आरोपित 23 वर्षीय योगेश शर्मा पुत्र मदनलाल शर्मा निवासी ग्राम कालियावाड़ा खेड़ा जिला भीलवाड़ा व 32 वर्षीय सूर्यप्रकाश त्रिपाठी पुत्र ओमप्रकाश त्रिपाठी निवासी ग्राम देवरिया जिला अजमेर हालमुकाम स्थानीय शक्तिनगर को गिरफ्तार कर 31 जनवरी को न्यायालय में पेश किया था। न्यायालय ने तीनों को तीन फरवरी तक पुलिस रिमांड पर रखने के आदेश दिए थे। पूछताछ में उन्होंने पुलिस को कई जानकारियां दी थी। तभी से पुलिस अन्य आरोपितों की तलाश में जुटी हुई है।

17 तक पुलिस रिमांड पर

एसपी राहुल कुमार लोढा के निर्देशन व एएसपी राकेश खाखा के मार्गदर्शन में गठित टीम को पता चला था कि, आरोपित बद्रीविशाल शर्मा पुत्र शिवनारायण शर्मा निवासी ग्राम कलियास जिला भीलवाड़ा भी गिरोह से जुड़ा होकर उनके मुंबई स्थित आफिस में मैनेजर होकर आफिस का संचालन करता है। पुलिस ने वहां दबिश दी, लेकिन वह नहीं मिला। इसी बीच पुलिस को पता चला था कि बद्रीविलास उत्तरप्रदेश भाग गया है। खोजबीन कर बद्रीविशाल को सोमवार को गिरफ्तार कर उसके पास से एक लैपटाप व दो मोबाइल फोन जब्त किए हैं। बद्रीविशाल को न्यायालय में पेश किया गया। न्यायालय ने उसे 17 फरवरी तक पुलिस तक पुलिस रिमांड पर रखने के आदेश दिए है। उसकी गिरफ्तारी में टीआइ राजेंद्र शर्मा, सायबर सेल प्रभारी (एसआइ) अमित शर्मा, एसआइ ध्यानसिंह सोलंकी, प्रधान आरक्षक मनोज पांडे, धीरज गावड़े आदि की भूमिका रही।

मुख्य आरोपित की तलाश

गिरोह का मुखिया विनोदकुमार नामक व्यक्ति बताया जाता है। वह राजस्थान के अजमेर का रहने वाला है। पुलिस विनोद व उसके अन्य साथियों की तलाश कर रही है।

भाजयुमो नेता ने टोल प्लाजा पर तानी पिस्टल

माही की गूंज, रतलाम।

रतलाम में भाजपा युवा मोर्चा जिला उपाध्यक्ष शुभम गुर्जर सहित 8 लोगों पर अवैध पिस्टल के साथ टोल प्लाजा पर गुंडागर्दी को लेकर अलग-अलग धाराओं में मामला दर्ज हुआ है। बड़ी बात यह कि आरोपियों पर घटना के 5 माह बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया है। एफआईआर होने के बाद भाजयुमो जिलाध्यक्ष विप्लव जैन ने शुभम गुर्जर को पद से हटा दिया है।

इस लेटलतीफी को लेकर बताया जा रहा है कि पेंडिंग मामले जितने भी थे। उनकी छानबीन में मामला सामने आया और इसके बाद इसमें भी कार्रवाई की गई है। बता दें कि, इस गुंडागर्दी का सीसीटीवी वीडियो भी सामने आया था। वीडियो में आरोपी शुभम गुर्जर बिलपांक टोल प्लाजा के दफ्तर में अवैध पिस्टल के साथ घुस कर धमकी देता दिखाई दे रहा है और इस दौरान आरोपी शुभम गुर्जर के साथ अन्य गुंडे भी अंदर घुस आते है।

ये है पूरा मामला

दरअसल ये पूरा विवाद चिकलिया टोल गेट से फ्री गाड़ी निकालने को लेकर है। बताया जाता है कि, जब युवा मोर्चा नेताजी की गाड़ी टोल पर पहुंची तो टोल कर्मचारियों ने उनसे टोल टैक्स मांग लिया और यही बात से पूरा विवाद शुरू हुआ। गुस्से से तमतमाए युवा मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष ने अवैध पिस्टल और अपने साथियों के साथ मिलकर, टोल ऑफिस में गाली-गलौच के बाद मारपीट तक कर डाली।

ये पूरा घटनाक्रम वहां लगे सीसीटीवी में कैमरे में कैद हो गया। जिसे लेकर आरोपी शुभम गुर्जर सहित आठ लोगों पर अलग-अलग धाराओं में प्रकरण दर्ज हुआ है। जिसमें से 2 आरोपियों की गिरफ्तारी हो गयी। वहीं मुख्य आरोपी शुभम गुर्जर सहित अन्य आरोपी फरार हो गए है, जिनकी जल्द गिरफ्तारी की जाएगी। जानकारी के मुताबिक आरोपी शुभम गुर्जर के खिलाफ उज्जैन के बड़नगर के लोगों ने भी 24 जनवरी 2024 को रतलाम एसपी से शिकायत की थी। जिसकी अभी जांच चल रही है।

'तुम मुझे भूल जाओ ये मैं...' प्रेमिका पर हैवान बनकर टूट पड़ा पूर्व प्रेमी

माही की गूंज, रतलाम।

मध्य प्रदेश के रतलाम जिले में 22 वर्ष की नवविवाहिता के हत्याकांड ने सनसनी फैला रखी है। वह चार दिन पहले मायके जाने निकली थी, लेकिन नहीं पहुंची। पुलिस को उसकी लाश सुनसान इलाके में मिली।

पुलिस ने अब इस हत्याकांड का खुलासा कर दिया है। महिला को उसके पूर्व प्रेमी ने ही मौत के घाट उतार दिया। वह उसकी शादी और उसे चांटा मारने से नाराज था। हत्या के बाद वह उसके जेवर लेकर फरार हो गया था। पुलिस ने घेराबंदी कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। विवाहिता की शादी दो महीने पहले ही हुई थी।

गौरतलब है कि, तीन दिन पहले पुलिस को एक महिला की अंजान लाश इमलीपाड़ा के पास मिली थी। पुलिस ने शव को जब्त कर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया था। पुलिस ने जांच की तो पता चला कि मृतक महिला का नाम प्रमिला डोडियार था। उसकी उम्र 22 वर्ष थी। पुलिस ने घरवालों के बयान दर्ज कर आगे की जांच की। इस बीच पुलिस को मृतिका के मोबाइल से पूर्व प्रेमी राजू खराड़ी का पता चला। पुलिस ने उसकी तलाश में कई जगह दबिश दी और घेराबंदी कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पहले तो वह पुलिस को भ्रमित करता रहा, लेकिन बाद में हत्या का सारा राज उगल दिया।

पुलिस ने बताई ये कहानी

रतलाम एसपी राहुल लोढ़ा ने बताया कि, महिला मायके जाने के लिए नकली थी। उसकी शादी दो महीने पहले ही चंद्रगढ़ में हुई थी। महिला का नाम प्रमिला डोडियार है। दो-तीन पहले उसका पति उसे बाजना बस स्टैंड छोड़कर गया था। उसे लगा था कि, उसकी पत्नी घर चली जाएगी। इस बीच जब उसकी बुआ सास ने मायके फोन किया तो पता चला कि वह घर नहीं पहुंची है। उसके बाद घरवालों ने उसकी तलाश शुरू की। युवती की तलाश के बीच इमलिया पाड़ा के पास उसकी लाश मिली।

इस बात से बौखला गया था पूर्व प्रेमी

लाश मिलने के बाद पुलिस ने मर्ग कायम किया। उसके बाद हुई जांच में राजू खिराड़ी का पता चला। उसका और युवती का प्रेम प्रसंग था। पति जब युवती को बाजना छोड़कर गया उस वक्त भी दोनों के बीच बातचीत हुई। बाजना में राजू युवती से मिलने पहुंचा। राजू शराब के नशे में था। यहां दोनों के बीच बात करते-करते विवाद हुआ। प्रमिला ने उसे चांटा मार दिया। इस पर राजू ने भी उसे मारा तो वह नीचे गिर गई. इसके बाद उसने महिला का गला घोंट दिया।

श्योर क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसाइटी का निर्विरोध निर्वाचन संपन्न

माही की गूंज थांदला।

मध्य प्रदेश राज्य सहकारी निर्वाचन प्राधिकारी भोपाल के आदेश अनुसार सहकारिता जिला झाबुआ के निर्वाचन अधिकारी कैलाश मुवेल द्वारा संस्था का निर्वाचन निर्विरोध संपन्न करवाए गए। जिसमें अध्यक्ष पद पर श्रीमती मंजू प्रदीप त्रिपाठी, उपाध्यक्ष के दो पदों पर अमित भाटी एवं दिलीप श्रीमाल तथा अन्य सहकारी संस्थाओं में भेजे जाने वाले प्रतिनिधियों के लिए जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित झाबुआ हेतु मोहनलाल गवली तथा जिला सहकारी संघ झाबुआ के लिए पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष बंटी डामर निर्विरोध निर्वाचित हुए। संचालक के पदों पर श्रीमती ममता गवली, कमलेश लोढ़ा, डॉक्टर सुनील सोनी, विनोद मोदी, संदीप सोलंकी, यश राठौड़, अशोक गुर्जर, पप्पू गवली, किशनलाल गवली, जगदीश धमानिया निर्वाचित हुए। जिन्हे संस्था के सदस्यों मयंक त्रिपाठी, जिनेंद्र लोढ़ा, चंद्रशेखर मेहता, राजेश सेठिया, मुकेश चौधरी, मुकेश पालरेचा ने कार्यालय में उपस्थित होकर सभी का स्वागत किया और संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों के लिए नए संचालक मंडल को अपने सदस्यों में वृद्धि और संस्था हित में कार्य करने के लिए शुभकामनाएं प्रदान की गई।

मत्स्य पालन इकोसिस्टम को बढ़ावा देने की पहल

वित्तीय साल 2024-25 के लिए अंतरिम बजट में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) के क्रियान्वयन में तेजी लाना एक उल्लेखनीय बिंदु है। इसका प्रयोजन मौसम में हो रहे बदलावों के प्रति सहनीय जल-कृषि, समुद्री उत्पादन, निर्यात में बढ़ोतरी और रोजगार के अवसर पैदा करना है। पिछले 10 सालों में, मछली उत्पादन दर में सालाना 8 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज हुई है, जो कि वर्ष 2022-23 में सर्वोच्च मात्रा को छूते हुए 175.45 लाख टन रही, जबकि 2013-14 में उत्पादन 95.79 लाख टन था (इसमें 75 फीसदी उत्पादन योगदान देश के के भीतर मीठे, कम खारे और खारे पानी के मछली पालन का है)। बड़ी बात कि 2022-23 में प्रति हेक्टेयर मछली उत्पादन 4.7 टन रहा, जो कि 2013-14 में 3 टन था। दूसरी ओर, हमारे सी फूड निर्यात में मुख्यतः बर्फ में लगा झींगा 111 प्रतिशत का इजाफा दर्ज हुआ है।

इस संदर्भ में, प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत अनेकानेक सफलता गाथाएं फली-फूलीं। इस केंद्रीय योजना और राज्य सरकारों एवं केंद्रशासित प्रदेशों की सरकारों के सहयोग से मत्स्य उत्पादन संवर्धन में प्राथमिक एवं उच्चतर स्तर पर 2.8 करोड़ मछुआरों-मछली पालकों को पेश आ रही समस्याओं को दूर किया गया। उदाहरणार्थ सौम्या सत्यानारायणा कर्नाटक के एक मछली पालक हैं और रिसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम तकनीक को अपनाकर, बहुत महंगी बिकने वाली मछली, जैसे कि तिलापिया का उत्पादन सफलतापूर्वक कर रहे हैं। इस तकनीक से जहां मछली घनत्व बढ़ता है वहीं पानी की बचत भी होती है। झारखंड से नवकिशर गोप एक मछली पालक हैं, जो केज-कल्चर के जरिये पैंगसियस किस्म की मछली का उत्पादन कर रहे हैं, इस तकनीक में चारा डालने, पानी बदलते रहने और समय पर फसल लेने पर ध्यान देना शामिल है। हरियाणा के सिरसा की कुलदीप कौर अपने 1 हेक्टेयर के खारे खेत में बनाए मछली तालाब में झींगा उत्पादन कर रही हैं।

मत्स्य पालन विकास गाथा में महत्वपूर्ण अवयव है बुनियादी परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करना जैसे कि तटीय सूबों में मछली बंदरगाह और आगत-निर्गम केंद्र स्थापना। जल के भीतर कृत्रिम चट्टानों के निर्माण और समुद्र-नदियों में बाड़ाबंदी कर मछली का बीज डालकर मूल भंडार का घनत्व बढ़ाने पर सतत ध्यान दिया गया। ठीक इसी वक्त, मछुआरे महिला-पुरुषों के लिए अनेक सामाजिक कल्याण पहलकदमियों के लिए जरूरत के अवयव मुहैया करवाए गए। इनमें मछली के प्रजनन काल के दौरान शिकार पर प्रतिबंध वाले महीनों में जीवनयापन सहायता, दुर्घटना जीवन बीमा रकम में बढ़ोतरी और मत्स्य क्षेत्र में किसान क्रेडिट कार्ड से संस्थागत उधार मुहैया कराना शामिल है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना ने इस पुनीत विकास में तेजी के लिए पूर्णरूपेण सरकारी प्रयासों को सम्बल दिया है। छोटे स्तर के मछुआरों या मछली पालकों के जीवन को बेहतर बनाने, अंतरदेशीय और समुद्री मत्स्य उत्पादन क्षेत्र को आगे विकसित करने के लिए विशेषज्ञ कुछ अन्य विषयक जरूरतों को सुदृढ़ करने पर जोर देते हैं।

प्रथम, प्रतिस्पर्धा और पैमाने की बचतों में इजाफे के लिए क्लस्टर अथवा क्षेत्र आधारित तरीके अपनाना। एक्वापार्क बनाने की शुरुआत इन उपायों को अपनाने का प्रमाण है। इन पार्कों के जरिये सकल उत्पादन तंत्र का स्वरूप पहिए में धुरे और तीलियों की तर्ज पर सोचा गया है जिसमें केंद्र में धुरे के तौर पर है उत्तम गुणवत्ता वाली मछली का उत्पादन और तीलियों के रूप में बीज, चारे, फसल उपरांत प्रसंस्करण तंत्र, खरीद-फरोख्त सुविधा इत्यादि। यह मत्स्य संवर्धन पार्क अन्य वैकल्पिक आमदनी जैसे कि जल-बूटी, एक्वेरियम में रखी जाने वाली सुंदर मछलियों और मोतियों का उत्पादन के मौके भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार के पार्क तमिलनाडु, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा, आंध्र प्रदेश और उत्तराखंड में निर्माणाधीन हैं।

द्वितीय, नवउद्यमों के लिए उद्यमित्ता एवं नवाचार के जरिये निजी क्षेत्र की भागीदारी वाला सक्रिय माहौल बनाना। ज़ारा बायोटेक नामक स्टार्टअप इसका एक उदाहरण है, जो प्रशासनिक एवं विभागीय मदद से, जल-बूटी और प्रवाल-आधारित उत्पादन कर रहा है। उत्पादों की बिक्री ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स के जरिये हो रही है, यहां तक कि यूके, ऑस्ट्रेलिया, जापान को निर्यात हो रहा है। मछलियों की बीमारियों की शिनाख्त, जल गुणवत्ता निगरानी और स्वचालित चारा मशीन प्रणाली बनाने वाले संलग्न नवउद्यमों की उपस्थिति में भी इजाफा होने लगा है।

तृतीय, उत्पादक और सहकारी संगठनों के जरिये प्रभावी भागीदारी बनाकर मछली भावों की सौदेबाजी में मछुआरों व मछली पालकों का हाथ ऊपर किया जा सकता है। ऑरोफिश नामक सहकारी संगठन इसका एक उदाहरण है, जो पुडुचेरी के अनथा मुत्थूवेल द्वारा चलाया 20 मछुआरा समूहों का नेटवर्क है। सहकारी उद्यम मछली की खरीद जिम्मेवारीपूर्वक करते हुए बाजार में 'रेडी टू ईट' उत्पाद पेश करते हैं। ऐसे सहकारी और मछली उत्पादन संघों का आपस में समन्वय बनवाकर, डिजिटल व्यापार हेतु ओपन नेटवर्क बनाने के यत्न भी हो रहे हैं।

चतुर्थ, गहरे समुद्र में मछली पकड़ने और तकनीकी रूप से उन्नत और नवीनतम संपर्क व्यवस्था से लैस मछली पकड़ने वाले जहाज निर्माण को बढ़ावा। कोचिन शिपयार्ड ऐसे उन्नत जहाजों का निर्माण कर रहा है तो स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन ने स्वदेशी तकनीक से विकसित करके आपातकालीन संदेश प्रेषण, मछली की बहुतायत वाले जलक्षेत्र की शिनाख्त और रियल टाइम में संपर्क बनाए रखने वाला तंत्र विकसित किया है। सततातापूर्ण मछली उत्पादन और बंदरगाहों पर साफ-सफाई पूर्ण उठान-लदान-भंडारण बनाने के साथ ही समुद्र में गए मछुआरों की सुरक्षा यकीनी बनाना जरूरी है।

पंचम, शृंखला के अंतिम छोर तक उत्पाद पहुंचाने हेतु संलग्न सेवाओं वाला तंत्र स्थापित करना। इसके लिए तटीय जिलों में 'सागर मित्र' योजना के तहत युवाओं को साथ जोड़ने की योजना शुरू की गई है। वे बंदरगाहों और लदान केंद्रों पर सामान्य कार्यों के अलावा प्राप्त मछली का हिसाब-किताब रखने में सहायक होंगे। साथ ही, तटीय जिलों में 'सागर परिक्रमा' नामक एक प्रेरक पहलकदमी हुई है, उद्देश्य है, सरकार के उच्चतम स्तर पर बैठे अधिकारियों द्वारा सामुदायिक बैठकों के जरिये मछुआरों से रूबरू होकर वास्तविक स्थिति जानना। विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि मत्स्य प्रबंधन एवं नियामक तंत्र ऐसा बनाना होगा जिससे कि ईज ऑफ डुइंग बिजनेस प्रभावशाली ढंग से फलीभूत हो सके। तटीय जल-कृषि प्राधिकरण (संशोधन) कानून 2023 में मत्स्य फार्म और मछली-बीज उत्पादन का पंजीकरण सरल बनाया गया है। इसमें झींगा और मत्स्य कृषि निर्यात में हो रहे इजाफे के मद्देनज़र बीमारियों की निगरानी की जरूरत पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

अभिलक्ष लिखी

इसके अलावा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में मत्स्य जैविकी सुधार, प्रजाति विविधीकरण और मछली उत्पादन पर मौसम में हो रहे बदलावों के असर पर अग्रणी खोज जारी है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के क्रियान्वयन में तेजी लाने के लिए केंद्रीय कैबिनेट ने विश्व बैंक के सहयोग से 6000 करोड़ रुपये की उप-योजना को मंजूरी दी है। इससे कार्य शिनाख्त में डिजिटल तकनीक के समावेश को सम्बल मिलेगा। इस राह से नवउद्यमों सहित सूक्ष्म, लघु उद्यमों को उत्पादन मूल्य शृंखला कार्यकुशलता व तलाश क्षमता सुदृढ़ करने को प्रोत्साहन दिया जाएगा। संस्थागत उधार तक पहुंच में इजाफा करने और फसल का बीमा करवाने को प्रोत्साहित करना ध्यान का एक अन्य बिंदु होगा। यह सब भारत में आजीविका और पौष्टिकता प्रदान करने वाले इस 'सूर्योदय क्षेत्र' के लिए बड़ा बदलावकारी सिद्ध होगा।

माही की गुंज का असर : देवेंद्र भानपुरिया ऐसा बौखलाया की उसकी बौखलाहट आई सड़क तक, एक लाख रूपए मांगे वो नहीं दिए तो प्रकाशित किए समाचार के भी लगाए आरोप

हरदा घटना को अपनी बौखलाहट का बनाया सहारा, प्रशासनिक कार्यवाही सराहनीय पर द्वेषभाव के साथ की जाने वाली कार्यवाही चिंतनीय

औद्योगिक क्षेत्र बर्फ प्लांट में मांसाहारी ढाबे के साथ परोसी जाती है शराब

तुषार इंडस्ट्रीज का प्रो. देवेंद्र भानपुरिया सोशल मीडिया पर पुष्टि करता है कि एक नंबर में ही तीन लाख कमाता हूं, तो ढाबे व शराब का अलग से कितना होगा मुनाफा ?

सोशल मीडिया पर देवेंद्र भानपुरिया खुले आम एसपी तक को समझ रहा है अपने पैरो की जूती

देवेंद्र की चतुराई का बड़ा खेलः फैक्ट्री का एरिया नाम मात्र पर अलॉटमेंट बड़ा

18 व 25 जनवरी को प्रकाशित समाचार से बोखलाया शातिर देवेंद्र।

अपनी शातिराना अंदाज के समाचार माही की गूंज में प्रकाशित होने के बाद अपने अवैध कारोबार को आगे संचालित करने के लिये माही की गूंज में समाचार आगें नही छपे की नियत के साथ कलमकार को दबाने व धमकाने की नियत के साथ देवेन्द्र भानपरिया ऐसा बोखलाया की उसकी बोखलाहट गालियों के साथ सड़क तक आई।

माही की गूंज खवासा।

गांधी जी की अहिंसा नीति के साथ महात्मा गांधी को आदर्श माना जाता है लेकिन बात जब आरोपो की आती है तो महात्मा गांधी भी आरोपो से अछूते नहीं रहे हैं। वही झाबुआ जिले की ही बात करें तो यहां मामा बालेश्वर दयाल को अपना आदर्श मानते हैं और उन्हें भगवान तक का दर्जा दिया गया है। परंतु वह भी कानूनी पछड़े से वंचित नहीं रहे थे, चूंकि उनके विरूद्ध भी कोई मामला दर्ज हुआ था और उनके दिवंगत होने के बाद उन्हें अपराधी तक ठहराया गया था। ऐसे में हम जैसे निष्पक्ष कलमकार की क्या बिसात, हमारे ऊपर भी झूठे आरोप लगते है और लगते रहेंगे इसलिये हम आरोपो की कभी चिंता नही करते। आम लोगों के हितों के लिए बेबाकी के साथ चलने वाली हमारी कलाम को रोकने का प्रयास करने के लिए आहत हुए व्यक्ति कितना भी प्रयास कर ले, पर यह कलमकार झाबुआ जिले की माटी में पैदा हुआ है और इस माटी में ही अपने क्षेत्र एवं जिले के लोगों के लिए हक के लिए लिखते हुए अंगीकार हो जाएगा। जो हमें हमारी निष्पक्ष लेखनी के साथ विरोधी मानते हैं माने, ,हम किसी की परवाह नहीं करते। कोई हमें हमारे सीने पर आकर गोली ,भी मार दे तो हम वह भी खाने के लिए तैयार है। लेकिन क्षेत्र के विकास और आमजनों के हितों के लिए माफियाओं, भ्रष्टाचारियों व दबंगो के विरुद्ध हमारी कलम बेबाकी के साथ चलती रहेगी।

बात करें, हरदा में फटाका फैक्ट्री में लगी आग व वहां हुई जनहानि की घटना की तो वह असहनीय है। उक्त घटना के बाद प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने भी अपनी संवेदना व सजकता दिखाई और प्रदेश में प्रशासनिक अमला भी त्वरित सक्रिय हुआ और प्रशासनिक कार्यवाही भी सराहनीय रही। प्रशासनिक कार्यवाही में प्रदेश में चल रही किसी भी अन्य फटाखा फैक्ट्रीयों में कार्यवाही के दौरान कोई अनियमितताएं सामने नही आई। लेकिन अस्थाई रूप से दीपावली पर्व पर लाइसेंस लेकर फटाका बेचने वाले व्यापारियों को प्रशासन ने कार्यवाही के नाम पर चिन्हित किया और कई स्थान पर प्रशासन के अस्थाई लाइसेंस धारीयों को दीपावली पर्व पर बचे हुए पटाखों को सुरक्षित स्थान पर रखने की हिदायत देख्कर पटाखे सुरक्षित स्थान पर रखवाए। वहीं अवैध रूप से गैस रिफिलिंग करने वालों के विरूद्ध भी छुट-पुट कार्यवाही प्रशासन द्वारा करने की सामने आई जो कार्यवाही सराहनीय भी है। इसी तरह झाबुआ-अलीराजपुर जिले की बात करें तो यहां का प्रशासन भी हरदा घटना के बाद प्रदेश के अन्य जिलों की तरह सक्रिय हुआ। घटना के बाद बुधवार-गुरुवार को प्रशासनिक कार्यवाही पूरी सक्रियता के साथ की गई और यहां भी सभी अस्थाई फटका लाइसेसी को चिन्हित कर अलग-अलग स्थानों पर प्रशासनिक दबिश दी गई। जिसमें कई स्थानों पर पटाखे मिलने पर अस्थाई लाइसेंसी धारी को सुरक्षित स्थान पर पटाखे रखने की हिदायत दी गई व सुरक्षित स्थान पर प्रशासन ने पटाखे रखवाए भी। वहीं कुछ व्यापारियों के प्रशासन ने पटाखे जप्त कर प्रकरण भी दर्ज किए।

विसंगति पूर्ण पटाखा लाइसेंस व्यवस्था, व्यापारी बेगुनाह होकर भी बन जाता है गुनहगार

विधि विरुद्ध कार्य करना गलत है यह हम सभी जानते हैं। वही प्रशासनिक, पटाखे जप्ती की उक्त कार्यवाही लाइसेंस व्यवस्था में विसंगतियो के चलते ही अस्थाई पटाखा लाइसेंसी धारी न चाहते हुए भी वह अपराधी की श्रेणी में आ जाते है। माही की गूंज ने दीपावली के पूर्व 19 अक्टूबर 2023 के अंक में ''दीपावली की खुशियों में प्रशासन का खलल'' फटाका लाइसेंस प्रणाली विसंगति पूर्ण'' शीर्षक के साथ समाचार प्रकाशित किया था। जिसमें उल्लेख किया था कि, निर्णय सख्त लेना चाहिए लेकिन सख्त निर्णय तर्कसंगत और समय अनुकूल होना चाहिए। तथा निर्णय व नियम शासन व प्रशासन द्वारा आम जनता की सुविधा के लिए ही बनाए जाते हैं ना की उनको परेशान करने के लिए। नोटबंदी और कोरोना काल में शासन ने जनता के हितों को देखते हुए कई बार नियम बदले व बनाए चूंकि सभी निर्णय जनता के हित के लिए थे जिसका आम जनता ने स्वैच्छिक पालन किया। हमने यह भी उल्लेख किया था की ,पटाखा के थोक व्यापारी के साथ फुटकर व्यापारी और सीजनल धंधा करने वाले के लिए आतिशबाजी को लेकर प्रशासन द्वारा कुछ कड़े नियम लागू किए गए हैं जो आम जनता के लिए गले की फांस बना हुआ है। सरकार दो तरह के पटाखा लाइसेंस जारी करती है। जिसमें एक बारहमासी लाइसेंस, दूसरा सीजनल लाइसेंस। पहला लाइसेंस बनाना आम व्यापारी के लिए टेढ़ी खीर है और यह बड़े शहरों व बड़े विक्रेताओं को जारी किया जाता है। वही दूसरा लाइसेंस सीजनल लाइसेंस है जो दीपावली पर पटाखा विक्रय हेतु बनाए जाते हैं। जो छोटे गांव से लेकर बड़े शहरों तक में कुछ निश्चित शर्तों के साथ जारी किया जाता है लेकिन सबसे ज्यादा परेशानी इन्हीं लाइसेंस धारियों को आती है। वही सीजनल व छोटा व्यापारी अनुमति लेकर व्यापार करने के बावजूद विसंगति पूर्ण आदेशों के चलते गुनहगार बन जाता है और अगर व्यापारी दीपावली के पहले माल खरीदता है, तो उसका स्टॉक कहां करें...? यही नहीं दीपावली के बाद अगर कुछ माल बच जाता है तो उसको कहां रखे...? उपयोग करें..? या फिर वापस थोक व्यापारी को लोटाएं...? अगर प्रशासन पटाखे का स्टॉक रखवाने की व्यवस्था न करवा पाए तो उनका क्या करें...? आदि प्रशासन की इस विसंगति पूर्ण नीति के चलते छोटे व मजले व्यापारी ना चाहते हुए भी प्रशासन की आंख की किरकीरी बन जाते हैं और प्रशासन के नुमाइंदे उन्हें परेशान करने में कोई कसर नहीं छोड़ते और प्रशासन की नजर में एक इमानदार व्यापारी भी जमाखोर और अवैध व्यवसाय बन जाता है। ऐसी स्थिति को देखते हुए गुंज ने लिखा था कि प्रशासन को चाहिए कि वह आतिशबाजी को लेकर तर्कसमत, सामयिक और जनहितैषी के साथ ही छोटे व्यापारियों को लेकर निर्णय बनाए ताकि व्यापारी अपना व्यवसाय कानूनी नियम के तहत कर सके।

गूंज में 19 अक्टूबर के अंक में प्रकाशित समाचार की तर्ज पर हरदा घटना के बाद सीजनल लाइसेंस धारी, लाइसेंस प्रणाली की विसंगतियों के चलते न चाहकर भी अपराधी की श्रेणी में व्यापारी आ गये।

बौखलाया हुआ देवेंद्र आया पटाखे जप्त करवाने

हमारी कलम सदैव आमजन के हितों के लिये चलती है तथा माफियाओं, भ्रष्टो, दबंगों व द्वेषभाव पूर्ण तथा अनियमित कार्य करने वाले अधिकारियों के विरूद्ध हमारी कलम चलती है यह सही है, और हमारी कलम से कितने व्यक्ति की बौखलाहट हमारे प्रति रहती होगी यह हमें भी नहीं मालूम है। लेकिन हमारी लेखनी का असर कितना बड़ा होता है यह खवासा में भी देखने को मिला। माही की गूंज में 18 जनवरी को ''औद्योगिक क्षेत्र बर्फ प्लांट में मांसाहारी ढाबे के साथ परोसी जाती है शराब '' तुषार इंडस्ट्रीज का प्रो.देवेंद्र भानपुरिया सोशल मीडिया पर पुष्टि करता है कि एक नंबर में ही तीन लाख कमाता हूं तो, ढाबे व शराब का अलग से कितना होगा मुनाफा...?'' ''सोशल मीडिया पर देवेंद्र भानपुरिया खुलेआम एसपी तक को समझ रहा है अपने पैरों की जूती'' और 25 जनवरी के अंक में ''देवेंद्र की चतुराई का बड़ा खेलः फैक्ट्री का एरिया नाम मात्र पर अलॉटमेंट बड़ा'' शीर्षक के साथ समाचार प्रकाशित किया था। जिसमें अपने आप को दबंग बताने वाला देवेंद्र भानपुरिया अपनी फैक्ट्री तुषार इंडस्ट्रीज मेघनगर में अवैध रूप से व बिना परमिशन के ढाबे का निर्माण कर अपने मांसाहारी ढाबे पर अवैध शराब भी परोसी जाती थी का खुलासा होने पर देवेन्द्र भानपुरिया को अस्थाई रूप से अवैध शराब का विक्रय मजबूरी में बंद करना पड़ा। आगे से माही के गूंज में उसकी दबंगई और किसी भी अवैध कार्य करने पर उसके समाचार माही के गूंज में प्रकाशित नहीं हो की नीयत से बौखलाया हुआ देवेंद्र भानपुरिया ऐसा बौखलाया की हमारे सीजनल लाइसेंस लेने के बाद खरीदी किए हुए पटाखे को पकडाकर दबाने व धमकाने का असफल प्रयास किया। बता दे कि, नियम के साथ अपने परिवार के भरण पोषण के लिए कोई भी व्यापार करना गलत नहीं होता। हम भी पिछले करीब 15-20 वर्षों से सिजनल फटाका लाइसेंस लेकर नियम संगत नियत स्थान पर फटाका विक्रय करते रहे हैं। प्रशासनिक विसंगतियों के चलते बचे हुए पटाखे पूरे सुरक्षित तरीके से कार्टून में पैक कर सुरक्षित ही रखे थे, कि हमारे मित्र रूपी विरोधी को पता लगा कि, इसके यहां भी बचे हुए पटाखे होंगे और यह बात अपने आप को दबंग बताने वाले देवेंद्र को सूचना दी गई। देवेंद्र भी अपनी बौखलाहट को प्रदर्शित करते हुए आया और जब परिवार के साथ हम शिर्डी शिंगणापुर यात्रा पर दर्शन करने हेतु गए थे। ऐसे में पटाखा कार्यवाही करवाने का सेहरा अपने सिर पर बांधकर व एक लाख रूपये मांगे और वो नही दिये तो माही की गूंज मे समाचार प्रकाशित किये के झुठे आरोप लगाकार अपनी दबंगता बता रहा है ,अच्छी बात है। ''निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छबाए, बिन पानी साबुन बिना निर्मल करें सुभाए''। हम सदेव उक्त स्लोगन का ही पालन करते है। जो हमारी निंदा करता है उसे हम हमारे पास ही रखते हैं और उसे हम हमारा सबसे बड़ा हितेषी ही मानते हैं। अगर हम भी कोई गलत कार्य करते हैं ऐसा किसी को लगता है तो बै संकोच हमें मार्गदर्शित करने का अधिकार सभी को है। उसे हम हमारा विरोधी नहीं हितेषी ही मानते हैं। लेकिन बौखलाया हुआ देवेंद्र भापुरिया की ऐसी करतूत रही कि, वह हमारे गांव के लोगों के सामने भी उसकी बौखलाहट आई और सामाजिक लोगों में भी हर कोई उसकी निंदा कर रहा है जिससे और ज्यादा देवेंद्र बोखला रहा है। वही बौखलाहट के मारे हमें भी फोन कर कह रहा है कि, माही की गूंज में प्रकाशित समाचार से तूने मेरा अवैध शराब का धंधा बंद करवाया है, यह तूने अच्छा नहीं किया। यानी कि देवेंद्र भानपुरिया खुद अपनी बौखलाहट के कारण फोन कर अपने शराब का धंधा बंद हो जाने की बात कह रहा है।

पुरे मामले में एक अधिकारी ने द्वेषभाव के साथ खेत पर पुरी तरह से सुरक्षित अवस्था में रखे हुए पटाखे को जप्त करवाने की कार्यवाही भी चिंतनिय है।

दिवाली की खुशियों में प्रशासन का खलल

19 अक्टुंबर 2023 को माही की गूंज मे प्रकाशित समाचार, पटाखा लाईसेंस प्रणाली विसंगति पूर्ण।

बसंत पंचमी पर घर-घर जा कर करते है विशेष पुजा

बसंत पंचमी पर दुकान पर पहुचकर पूजन करवाते 80 वर्षीय कालूराम बारोट

माही की गूंज, बरवेट।

पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण ने सरस्वती से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था कि, बसंत पचंमी के दिन तुम्हारी आराधना जो भी प्राणी करेगा उसको यश, कीर्ति, वैभव, बल, बुद्धि और धन की प्राप्ति होगी। इस कारण हिंदू धर्म में बसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी सरस्वती की पूजा की जाती है। इस दिन माँ सरस्वती की पूजन करने से बुद्धि और धन की निरंतर प्राप्ति होती है। इसी को लेकर गाव में एक अनूठी परंपरा आज भी कायम है। जिसका निर्वहन आज भी गाव में हो रहा है। ग्राम बरवेट के 80 वर्षीय कालूराम बारोट पूजन की थाली में पिले मोरफूल, गुलाल की थाली सजाकर घर-घर जाते है और पूजन करवाते है। जिससे उनके घर पर बल, बुद्धि, ज्ञान, ओर धन की निरंतर बढ़ोतरी होती रहे। यह परंपरा आज भी कायम है।

बरसो पुरानी परंपरा का निर्वहन कर रहे है

ग्राम बरवेट के कालूराम बारोट ने बताया कि, बसंत पंचमी के दिन माँ सरस्वती की पूजा की जाती है। जिसमे पिले रंग के मोरफूल जो कि आम के पेड़ पर खिलते है। उन फूलो का पूजन में अति महत्वपर्ण माना गया है। बसंत पंचमी के दिन पूजन की थाली में मोरफूल, गुलाल ओर पूजन की अन्य सामग्री को लेकर गाव के हर घर जाकर पूजन करवाते है। जिससे उनके घर मे माँ सरस्वती की कृपा बरसती रहे। वही व्यापारी वर्ग उनके गुल्लक ओर तोलकाटे की पूजन करवाते है। जिससे उनके व्यापार में बरकत बनी रहे। इसके बदले में जजमान इक्षानुसार पूजन थाली में रुपया भी चढ़ाते है। पूर्वजो द्वारा बरसो पुरानी परंपरा है जिनका निर्वहन आज भी कर रहे है।

पूजा में पीले रंग एव मोरफूल का खास महत्व

बरवेट क्षेत्र के पंडित राजेन्द्र प्रसाद त्रिवेदी ने बताया कि, मान्यता है की बसंत पंचमी के दिन माता सरस्वती का जन्म हुआ था। इसलिए बसंत पंचमी के दिन सरस्वती माता की विशेष पूजा की जाती है। मां सरस्वती को विद्या और बुद्धि की देवी माना जाता है। बसंत पंचमी के दिन मां सरस्वती से विद्या, बुद्धि, कला और ज्ञान का वरदान मांगा जाता है। इस दिन पीले रंग के कपड़े पहन कर पीले फूलों से देवी सरस्वती की पूजा करने ज्ञान और बुद्धि में वृद्धि होती है। पीले रंग को बसंत का प्रतीक माना जाता है। ओर आम के मोरफूल को मा सरस्वती की पूजा में चढ़ाने का बड़ा महत्व है। जिससे सारी मनोकामनाए पूर्ण होती है।

सड़क चौडीकरण की वाट जो रहै ग्रामीण

माही की गूंज, बरवेट।

पेटलावद-देवली मार्ग का रिनुअल कार्य बरवेट से प्रारंभ।

विगत एक दशक से पेटलावद, बरवेट देवली मार्ग चौड़ीकरण का मुद्दा अब तक भी ठंडे बस्ते में ही चल रहा है और क्षेत्रवासी सड़क चौडीकरण की वाट ही जो रहै है। इस मार्ग का इस बार भी रिनुअल कार्य प्रारंभ हो गया है। जिससे इस रोड का चौड़ीकरण अगले पांच वर्षों तक के लिए कागजो में कैद हो कर रह जाएगा है।

सड़क चौड़ीकरण नही होने से क्षेत्र का विकास यथा स्थिती मे रह गया है। वही सड़क पर जाम और दुर्घटना जैसी गंभीर समस्या बढ़ जाएगी। ग्रामीण क्षेत्र के लोगो का कहना है कि इस सड़क की तस्वीर बदलती है तो क्षेत्र के विकास में सहायक होती।

मामला प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना द्वारा निर्मित पेटलावद-देवली मार्ग का है , जिसका निर्माण 20 साल पहले हुआ था। पिछले एक दशक से सालों के बाद जर्जर सड़क, सिंगल पट्टी सड़क से प्रतिदिन निकलने वाले बड़े वाहन लोगों के लिये परेशानी का कारण बने हुए है। वही इस मार्ग पर यातायात का भारी दबाव भी बना हुआ है। जबकि तहसील मुख्यालय से यह रास्ता सेकड़ो गांव को जोड़ता है। यू समझो कि पेटलावद के व्यापार, व्यवसाय के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण सड़क मार्ग है। क्योंकि बरवेट क्षेत्र के सेकड़ो सब्जी उत्पादक किसान अपनी उपज को लेकर मंडी में जाते है। वही पढ़ाई, हॉस्पिटल, कोर्ट, तहसील कार्यालय पर कार्य के लिए जाने हैतु इसी मार्ग का उपयोग होता है। इस दिशा में किसी प्रकार से अब तक किसी जनप्रतिनिधि का ध्यान नहीं दिया जाना समझ के परे है।

केबिनेट मंत्री निर्मला भूरिया ने कहा कि, देवली-पेटलावद मार्ग काफी जर्जर हो गया है। जिसके चौड़ीकरण की मांग क्षेत्र वासियो के द्वारा मेरे पास भी आई थी। अभी विभाग से रिनुअल कार्य प्रारंभ करवा दिया है। शीघ्र ही इसका चौड़ीकरण भी किया जाएगा। इसके लिए पांच साल तक इंतजार नही करना पड़ेगा।

संपादकीय

सड़क पर किसान

यदि राजनीति और अन्य दुराग्रहों को नजरअंदाज कर दें तो देश के लिये अन्न उगाने वाले किसानों का अपनी मांगों के लिए सड़क पर आना दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा। भले ही 2020-21 में हुए लंबे किसान आंदोलन के दौरान होने वाली हिंसक घटनाओं और लाल किले प्रकरण के मद्देनजर केंद्र व हरियाणा सरकार सख्ती दिखा रही हो, लेकिन फिर किसानों के लिये मार्ग में भारी-भरकम अवरोध लगाने और कीलें बिछाने की कार्रवाई को अच्छा नहीं कहा जा सकता है। नि:संदेह,प्रशासन के सामने कानून-व्यवस्था का प्रश्न होता है और ऐसे आंदोलन के दौरान अराजक तत्वों की दखल का अंदेशा बना रहता है। आम नागरिकों की सुरक्षा के मद्देनजर ऐसे उपाय जरूरी हो सकते हैं मगर सवाल यह है कि ऐसी स्थिति आती ही क्यों है...? समय रहते किसानों के जायज मुद्दों पर संवेदनशील पहल क्यों नहीं होती। तीन कृषि कानूनों के विरोध में लंबे चले आंदोलन के बाद हुए समझौते से जुड़े मुद्दों पर अमल के लिये केंद्र सरकार के पास पर्याप्त समय था। बेहतर होता कि कुछ मांगों को पूरा करने पर पहल होती। वैसे सरकार की दलील रही है कि इतने बड़े देश में हर फसल को एमएसपी के दायरे में लाना व्यावहारिक न होगा और उसका अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव पड़ेगा। लेकिन इसके बावजूद हम स्वीकारें कि आज खेती घाटे का सौदा बन गई है। किसानों की आत्महत्या को इससे जोड़कर देखा जाना चाहिए। नई पीढ़ी अब खेती से कतराने लगी है। निस्संदेह, भारतीय खेती का स्वरूप विशुद्ध व्यावसायिक नहीं रहा है, लेकिन हमें याद रहे कि देश की करीब आधी आबादी प्रत्यक्ष और परोक्ष तौर पर खेती व उससे जुड़े व्यवसायों पर निर्भर है। अत: खेती को लाभकारी बनाने की जरूरत है। कोई बीच का रास्ता किसान असंतोष को दूर करने के लिये उठाया जा सकता है। दरअसल, किसान आंदोलनकारी स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें लागू करने , खेतिहर मजदूरों के लिये पेंशन, कृषि ऋण माफी, डब्ल्यूटीए से हटने, किसानों पर दर्ज मुकदमें वापस लेने, लखीमपुर खीरी कांड के पीड़ितों को आर्थिक मुआवजा देने की मांग कर रहे हैं।

विडंबना है कि, आंदोलन की शुरुआत से पहले किसानों से केंद्रीय मंत्रियों की मैराथन वार्ता बेनतीजा रही। जिसके बाद किसान नेताओं ने दिल्ली कूच करने के फैसले को अंतिम रूप दिया। दरअसल, किसान भी जानते हैं कि देश में जब आम चुनाव सिर पर हैं तो केंद्र सरकार पर दबाव बनाया जा सकता है। न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी के लिये कानून बनाने का उनका सबल आग्रह है। निस्संदेह, किसी भी संगठन को आंदोलन करने का संवैधानिक अधिकार है। लेकिन प्रयास होना चाहिए कि आंदोलन हिंसक रूप न ले और आंदोलन योजनाबद्ध ढंग से तार्किक परिणति तक पहुंचे। किसानों के मुद्दे अपनी जगह हैं लेकिन किसानों को रोकने के लिये सरकारों द्वारा की गई व्यूह रचना से आम लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हरियाणा के कई जिलों में इंटरनेट सेवाएं बंद पड़ी हैं। शासन-प्रशासन ने यात्रियों के लिये जो वैकल्पिक मार्ग तय किये हैं, यात्री उनमें भटक रहे हैं। दिल्ली की नाकेबंदी के चलते भयंकर जाम की स्थिति बन गई है और लोग तीन-चार घंटे तक जाम में फंसे रहे हैं। कई स्थानों पर किसानों को लेकर लोग आक्रोश व्यक्त करते रहे। परिवहन व्यवस्था सुधारने के बाबत सुप्रीम कोर्ट की तरफ से भी प्रतिक्रिया आई है। निस्संदेह, किसानों को अपनी जायज मांगें रखनी चाहिए, वहीं सरकार को भी किसानों की समस्याओं के प्रति संवेदनशील व्यवहार दिखाना चाहिए। आंदोलन पर राजनीतिक दलों की टिप्पणियों के बाद देश के शेष जनमानस में यह संदेश नहीं जाना चाहिए कि आंदोलन के मूल में राजनीतिक निहितार्थ हैं। वहीं किसानों को भी आने वाले समय में खेती में आने वाली चुनौतियों को भी नजर में रखना चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग, भूजल संकट और अन्य खामियों को दूर करने समेत दीर्घकालीन लक्ष्यों के लिये प्रयास तेज करने चाहिए। केंद्र सरकार को भी सोचना चाहिए कि जिस कृषि वैज्ञानिक स्वामीनाथन को इसी माह भारत रत्न दिया गया है, उसी की सिफारिशों को लागू करने में विलंब क्यों हो रहा है।

गुलज़ार हुआ बाजार मगर बेज़ार है प्यार

अरूण नैथानी

ग्लोबलाइजेशन व उदारीकरण की फिजा में बाजार ने केवल शेयर मार्केट ही नियंत्रित नहीं किया, उसकी नजर सदियों से बहते शाश्वत प्रेम के स्रोतों पर भी पड़ी। बाजार अपने साथ कारोबार के गुण-सूत्र ही नहीं लाता, वह हमारे जीवन व्यवहार को बदलने की पुरजोर कोशिश करता है। ताकि इंसान को उत्पादन बना सके। पश्चिमी बाजार के अपने नायक हैं। उसके अपनी सुविधा के पर्व-त्योहार होते हैं। ये वे त्योहार होते हैं जो बाजार को ऊर्जा देते हैं। कारोबार को सींचते हैं। फिर धीरे-धीरे देश-दुनिया में एक प्रेम का देवता अवतरित हुआ। उस देश में भी जहां प्रेम की आध्यात्मिक और सांसारिक प्यार की अविरल धाराएं बहती रही हों। मीरा और राधा का निच्छल प्रेम, जहां प्रेम का विपुल साहित्य रचा गया हो। अब चाहे वे निराकार-साकार भक्ति-प्रेम की अजस्र धाराएं हों, या बाह्य प्रेम की रीतिकालीन धारा। उस देश में जहां कामसूत्र और अजंता-एलोरा की गुफाओं में प्रेम के उदात्त रूप की अभिव्यक्ति हुई हो। जिसके मूल में सामाजिक वर्जनाएं नहीं थी, बल्कि सामाजिक मर्यादाएं थीं। प्रेम का वह उत्कृष्ट रूप, जो आज तुरत-फुरत प्यार करने वाली पीढ़ी शायद ही समझ पाए। तभी ये पीढ़ी प्यार की अभिव्यक्ति के लिये चाकलेट व टैडी बीयर का सहारा लेती नजर आती है।

जलवायु परिवर्तन और अलनीनो प्रभाव से ग्रसित हमारे मौसम के बावजूद अपने आसपास के वातावरण को महसूस कीजिए। कुदरत मुस्करा रही है। फूल खिले हैं- खेत-खलिहान और घर आंगने में। वृक्षों पर नई कोपलें हैं। फलदार वृक्षों में बौर आने को है। थोड़ी-ठंड, थोड़ी गर्मी। कुदरत अपनी केंचुली बदल रही है। नये सृजन को तैयार है कायनात। किसान के आंगन में फसलें लहलहा रही हैं। खेतों में पीली सरसों मन मोह रही है। वासंती बयार चारों ओर अपनी मोहक अदा दिखा रही है। ऐसे में जंगल में मोर ही नहीं, मन-मयूर भी नाच उठे तो उसे इंसान की स्वाभाविक प्रतिक्रिया ही कहा जाएगा। इस सम्मोहक वातावरण में यदि एक विदेशी प्रेम के देवता का अभिषेक बाजार करे तो उसकी कामयाबी का श्रेय हमारे परंपरागत प्रेमिल अहसासों तथा परिवेश को है। ऐसे में ही हफ्ते भर का प्रेम कैलेंडर लागू करने के लिये टैडी-बीयर और चाकलेट के सहारे की जरूरत बाजार को है। अपने देश में हफ्ता नहीं, साल के 365 दिन प्रेम का कैलेंडर है। दैहिक नहीं, शाश्वत प्रेम का।

अपने आसपास वसंत पंचमी को महकते देखिए। भूल जाइए कि आज वसंत पंचमी है। महसूस कीजिए कि कुदरत वसंत के रंग में रंगी है। किसान के खून-पसीने से महकते पीली सरसों के खेत को देखिये। सारी कायनात मुस्करा रही है। कह रही है देखो, इस मंडराते भंवरे से पूछो कि प्यार क्या होता है। अपनी जरूरत के लिये फूलों के पराग को लेकर उड़ जाता है। मासूम फूलों व कलियों को नहीं मसलता है। उसका प्रेम सदियों से शाश्वत है। आसमान में लहराती-इठलाती पतंगों से पूछिए वे किसके प्यार में बहकी हुई हैं। किसके प्यार में कट जाने को तैयार हैं। आखिर इतनी ऊंचाई पर जाने के बाद उसे फिर धरती पर लौटने की जरूरत क्यों होती है? प्रेम का अपना अनुशासन है। अपनी मर्यादा है। सदियों से अटूट प्रेम और समर्पण की असंख्य कहानियां हमारे साहित्य और इतिहास के पन्नों पर दर्ज हैं। प्यार के लिये समर्पण और त्याग की कहानियां। सिर्फ एक खास दिन या सात दिन के टाइम टेबल के साथ नहीं। प्रेम मानव की सर्वोच्च सुकोमल अभिव्यक्ति है। समाज ने उसका विरोध कभी नहीं किया। सिर्फ उसके मर्यादा लांघने और फूहड़ प्रदर्शन का विरोध किया है। हर समाज के अपने कायदे-कानून होते हैं। उसके तालिबानी बनने की अपनी ठोस वजहें हैं। प्यार नफासत का नाम है। प्यार इंतजार का नाम है। प्यार परिपक्व उम्र का खिदमतगार है। वह अभिव्यक्ति में मर्यादा मांगता है। वह दैहिक मांसलता का तलबगार नहीं है।

वसंती बयार में पीत वस्त्रों में सजी-धजी कुदरत का इतराना देखिए। उसके साथ-साथ चलते सदियों से हमारे पूर्वजों द्वारा अर्जित संस्कारों का इजहार देखिए। घरों में पीले चावलों की महक देखिए। आकाश में इठलाती पतंगों को देखिए। खेतों में पीत वस्त्र धारण किए फसल को देखिए। प्रेम की सकारात्मकता को देखिए। किसी को रिझाने के लिये बाजारी उत्पादों की जरूरत नहीं होती। बाजार तो निर्मम है। बारिश होती है तो उसका छाता निकल आता है। सर्दी होती है तो गर्मी देने वाले उत्पादों का बाजार सज जाता है। ठंड होती है तो वह लोगों को डराकर अपने उत्पाद बेचना शुरू कर देता है। प्रदूषण बढ़ता है तो एयर प्यूरिफायर बेचने लगता है। त्योहार आते हैं तो उपहारों की सेज सजा देता है। फिर वसंत का यौवन निखरता है तो प्रेम को बाजार बना देता है। प्रेम तो सुकोमल अहसासों का इजहार है। जीवनपर्यंत साथ निभाने का वादा है प्यार। नये दौर का फलसफा, पहले उन्मादी प्यार, फिर कोर्ट-कचहरी के लिये तैयार। प्यार एक ठहराव का नाम है। ऐसी उच्छृंखलता क्योंकि प्रेम के इजहार के लिये बने गेड़ीरूट पर पुलिस-प्रशासन को निगाह रखनी पड़ती है। प्यार अराजकता का नाम नहीं है। उसकी संवेदनशीलता को महसूस करने की जरूरत है। ये रिश्तों का फास्ट-फूड नहीं है। धीमी आंच में पकने के बाद ही किसी व्यंजन में लजीज स्वाद आता है। वैसे ही प्रेम भी धीरे-धीरे अपनी पूर्णता को प्राप्त करता है।

सभ्य समाजों का दस्तूर रहा है कि रिश्तों की पवित्रता के लिए एक अनुशासित व्यवहार को तरजीह दी जाती है। यही किसी समाज का ताना-बाना भी तय करता है। उसमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनुभवों का हस्तांतरण होता है। तभी वह पूर्णता से संपूर्णता की ओर बढ़ता है। समाज से मान्यता पाता है। ऐसे में प्रेम का इस तरह का इजहार न हो कि जिसे देख पुरानी पीढ़ी शर्मसार हो जाए। इस प्रेम की सघन अभिव्यक्ति विवाह संस्था के रूप में देखिए। मां-बाप अपनी जीवन भर की पूंजी लगाकर बच्चों के प्रेमिल अहसासों को संबल देते हैं। उसमें जुटने वाले नाते-रिश्तेदार और मित्र ऐसे प्रेम को मान्यता देते हैं। यही वजह है कि भारत में वैवाहिक रिश्ते दीर्घकालीन होते हैं। भारत वह समाज है जिसने प्रेम को प्रतिष्ठा दी है। अलगाव को नहीं स्वीकारा है। यही वजह है कि इस समाज की डिक्शनरी में तलाक व डाइवोर्स शब्द का पर्यायवाची नहीं है। ये समाज प्रेमिल अहसासों को सार्थक परिणति तक पहुंचाने में विश्वास रखता है। तुरत-फुरत बाजारी प्रेम में वो गारंटी नजर नहीं आती जो सात जन्मों के बंधन की बात कह सके।

भारतीय परंपरा में वसंत पंचमी ज्ञान और विवेक की देवी सरस्वती को याद करने का दिन भी है। ये दिन सिर्फ प्यार में बहकने का ही दिन नहीं है। ये कलम पूजा का दिन भी है। जीवन के सात्विक मूल्यों की प्रतिष्ठा का भी दिन है। यह बताने के लिये कि हमें जीवन यात्रा में रिश्तों के निर्वाह में सात्विक व्यवहार की जरूरत भी है। यह दिन देश के गांव-देहात में होलिका की स्थापना का दिन भी है। यह बताने के लिये कि ठीक चालीस दिन बाद रंगों की बहार आने वाली है। प्रेमिल अहसासों में शुष्क स्पर्श की अभिव्यक्ति का पर्व होली के आने की तैयारी है। मन के कलुष को त्याग कर प्रेम के रंग बरसाने का उत्सव आने को है। यह भी कि वासंती रंग से शुरू होकर चटख रंगों में रंग जाने का उत्सव आने ही वाला है।

इश्क की चादर तले फलू-फूले कारोबार

वैलेंटाइन डे सामने है। इश्क एक जमाने में खतरे का काम हुआ करता था, अब वह धंधे का काम हो गया है। चॉकलेट, फूल, टैडी बीयर, पता नहीं क्या क्या बेच लिया जाता है, वैलेंटाइन डे के नाम पर। आखिरी सच धंधा ही है।

एक चॉकलेट कंपनी ने इश्तिहारबाजी मचा रखी है कि प्रेमीगण हमारी चॉकलेट से ही प्रेम करना। चॉकलेट प्रेम असल प्रेम है, बाकी किसे कौन प्रेम कर रहा है, यह सवाल फर्जी टाइप का है। नौजवान असली प्रेमी तब ही माने जायेंगे, जब फलां चॉकलेट कंपनी के मुनाफे बढ़ जायेंगे।

इधर मुझे बहुत टेंशन होने लगती है कि कंपनियां अपनी चॉकलेटबाजी में कहीं पुरानी प्रेम कथाओं को ही न तब्दील कर दें। लैला-मजनू की कथा कुछ यूं न कर दी जाये कि लैला ने कहा मजनू से कि तू वैलेंटाइन डे पर मेरे लिए स्विट्ज़रलैंड से स्विस चॉकलेट ला। मजनू बेचारा बेरोजगार स्विस चॉकलेट न ला पाया, सो लैला ने उस अफसर से शादी कर ली, जिसका स्विस खाता स्विट्ज़रलैंड में था।

इस तरह की कथाओं को स्विस सरकार और स्विस बैंक स्पांसर कर देंगे। किसी को प्यार से मतलब नहीं है, मतलब सिर्फ और सिर्फ धंधे से है। धंधे से हम लोगों को इस कदर इश्क हो गया है कि इश्क को ही धंधा बना लिया है। वैलेंटाइन डे पर टैडी बीयर का भी धंधा चल निकलता है। टैडी बीयर अगर सोच पाता तो सोचता कि भालू का

क्या काम है इश्क में। पर है जी काम है पक्का काम है इश्क में भालू का। भालू की तरह बेडौल आम तौर पर बंदा शादी के कुछ साल बाद होता है। टैडी बीयर का इश्कबाजी में इस्तेमाल शायद इसलिए किया जाता है, वजन पर ध्यान दीजिये वरना भालू हो जायेंगे।

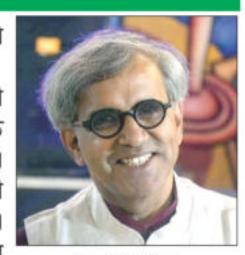

आलोक पुराणिक

दरअसल, बेचना ही केंद्रीय गतिविधि है। इश्क वगैरह सब बहाना है। बेचमेव जयते, बेचने की जय हो। बेचेंगे तो बचेंगे। जो बेच न पा रहा है, बच न पा रहा है। परम सत्य यही है, भले ही बाजारी हो यह सत्य। पर सत्य यही है। शीरी फरहाद, रोमियो जूलियट-इन सारी प्रेम-कथाओं में देर-सवेर चॉकलेट घुस जायेगी। मुफ्त में प्यार कैसे हो सकता है। मुफ्त में प्यार होना नहीं चाहिए। कुछेक बरस ऐसी चॉकलेटबाजी और वैलेंटाइनबाजी चलती रही, तो पता चलेगा कि कहानी नयी हो गयी। एक कहानी यह भी सकती है कि दुनिया में प्यार नहीं था तो ऊपर वाले को पहले चॉकलेट बनानी पड़ी ताकि प्यार की शुरुआत की जा सके। क्योंकि चॉकलेट के बगैर तो इश्क संभव न था।

ऐसे ऐसे नौजवान हैं, जिनकी मां अगर पूजा के फूल मंगवाये, तो कतई न लायेंगे। पर ये ही नौजवान गुलाब धरे टहलते रहते हैं वैलेंटाइन डे के मौके पर। गुलाब चॉकलेट और टैडी बीयर इनकी सेल से ही तय होगा कि प्रेम बढ़ रहा है या नहीं।

ज़िंदादिल और आत्मनिर्भर बुजुर्गों की हंसी

पिछले कुछ समय से स्विट्ज़रलैंड के शहर जिनेवा में हूं। बीमार पड़ी तो डाक्टर के पास जाना पड़ा। यहां भारत की तरह नहीं है कि जब चाहें डाक्टर से समय मिल जाए, बहुत समय लगता है अप्वाइंटमेंट मिलने में, लेकिन मैं किस्मत वाली थी। अगली दोपहर डाक्टर के पास बैठी थी। एक चीज जो बार-बार चकित होकर देख रही थी कि डाक्टर से मिलने बेहद बूढ़े स्त्री-पुरुष आ रहे थे। वे अकेले थे। उनके साथ कोई नहीं था। लेकिन इस बात की कोई चिंता दिखाई नहीं देती थी। उनकी चाल में बेहद मस्ती थी। वे झुककर भी नहीं चल रहे थे। वे सीधे चलते आते थे। और उनमें से कई तो निश्चय ही नब्बे साल या उससे ऊपर रहे होंगे। वे बैठते थे। फिर पास बैठे व्यक्ति से बातचीत में तल्लीन हो जाते थे। आपस में बातचीत करके बात-बात पर खिलखिला रहे थे। वे डाक्टर के पास से भी खुश-खुश निकल रहे थे। समझ में नहीं आ रहा था कि वे इतने खुश क्यों थे।

आखिर डाक्टर के पास आप किसी बीमारी को लेकर ही आते हैं, जिसके कारण चिंता होना स्वाभाविक है, लेकिन चिंता की जगह उनके चेहरे पर खुशी और हंसी दिखाई देती थी। शायद उसका कारण यह होगा कि वे सोचते हैं कि अगर कोई बीमारी है तो उसका इलाज भी है। और इलाज डाक्टर ही कर सकता है। बीमारी से डरने के मुकाबले उसका इलाज कराएं। फिर यहां उनके इलाज, उनके जीवन की जिम्मेदारी सरकार की होती है। सरकार अपने नागरिकों की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखती है। इसके अलावा यह सोच भी है कि जीवन एक बार ही मिलता है। उसे ठीक तरह से जिया जाए। यहां चिकित्सा सुविधाएं भी बहुत अच्छी हैं। हर एक आदमी का चिकित्सा बीमा होना अनिवार्य है।

इनके मुकाबले अपने देश पर नजर डालें। बीमार पड़ने पर हम अक्सर डाक्टरों के पास जाने से बचते हैं। बीमारी का इलाज कराने के मुकाबले हम सोचते हैं कि कैसे भी यह अपने आप ठीक हो जाए। पचास साल की उम्र में ही जैसे हम खुद को बूढ़ा मान लेते हैं और सोचते हैं कि अब गए कि तब गए। कुछ अधिक उम्र होने से डाक्टर के पास जाने के लिए किसी सहारे की जरूरत तलाशते हैं। इसीलिए आप पाएंगे कि अस्पतालों में मरीजों से ज्यादा उनकी देखभाल करने वालों की भीड़ होती है। अस्पतालों में भी सारी भागदौड़ का काम अटेंडेंट के जिम्मे होता है। दस बार बुलाने जाएं तो नर्स आ पाती है। जिस अनुपात में मरीज हैं, उस अनुपात में चिकित्सा सुविधाएं बहुत कम हैं। किसी का इस ओर ध्यान भी नहीं जाता। बहुत से अस्पतालों में गंदगी भी बेशुमार है।

कई बार गलत इलाज की खबरें भी आती हैं। बहुत से लोग इलाज कराने इसलिए भी नहीं जा पाते कि उनके पास पर्याप्त साधन नहीं होते, जागरूकता भी नहीं होती। सरकारी अस्पतालों के अलावा प्राइवेट अस्पतालों का इलाज इतना महंगा है कि हो नहीं पाता। लोग बिल भरने की आर्थिक स्थिति में नहीं होते। इसका एक बड़ा कारण अपने देश की आबादी भी है। जिस पर वोटों की खातिर कोई सरकार नियंत्रण भी नहीं करना चाहती। इसीलिए संसाधन अगर उपलब्ध भी कराए जाएं तो वे लोगों तक ठीक से पहुंचते नहीं हैं।

संयुक्त परिवारों के बिखरने से हमारे यहां के बुजुर्गों की हालत दयनीय है। उनमें से बहुतों के पास भरण-पोषण के साधन नहीं हैं। परिवार होते हुए भी परिवार को उनकी परवाह नहीं है, तो वे इलाज कैसे कराएं। साधन कहां से जुटाए जाएं। एक अनुमान के अनुसार अपने यहां दस करोड़ बुजुर्ग बताए जाते हैं। इनके वोट तो सभी को चाहिए लेकिन इनकी दुरावस्था को ठीक करने की कोई योजना नहीं बनाई जाती।

यहां के बुजुर्गों को देखती हूं और अपने यहां के बुजुर्गों के बारे में सोचती हूं, तो मन खिन्नता से भर उठता है। यहां के बुजुर्ग बेशक अकेले हैं मगर सरकार उनके साथ है। वे स्वाभिमान का जीवन जी सकते हैं। सही इलाज पा सकते हैं। वे अस्सी-नब्बे साल की उम्र में भी मॉल्स में ट्राली लेकर अपना सामान खरीदते नजर आते हैं। सड़कों पर दौड़ते दिखते हैं। कई जगह तो खेलते भी दिखाई देते हैं। इसमें बुजुर्ग महिलाएं भी पीछे नहीं रहतीं। हाल ही में एक परिचित ने बताया कि नब्बे साल की एक महिला ने ड्राइविंग लाइसेंस का टेस्ट पास किया है। वे तमाम आयोजनों में युवाओं की तरह ही बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

दरअसल, उनके पास अपने देश वाला अनेक जन्मों का विचार नहीं है, इसलिए वे जीवन को भरपूर जीते हैं। जबकि हम जीवन को इसी भरोसे छोड़े रहते हैं कि इस जीवन में कुछ अच्छा नहीं है, तो अगले जीवन में होगा और इस जीवन में जो दु:ख तकलीफें मिल रही हैं, वे पिछले जन्मों के पापों का परिणाम हैं। और भगवान की मर्जी के कारण ऐसा हो रहा है। शायद यही वजह कि जिनके पास सारे साधन मौजूद हैं, वे भी डाक्टरों के पास समय से नहीं जाना चाहते। वे डाक्टर से उम्मीद करते हैं कि वह उनके मन की बात करे। यानी कि कभी किसी बीमारी के होने की बात न बताए। जबकि डाक्टर का काम ही बीमारी को खोजना और उसका निदान करना है। अगर बीमारी खोजी ही नहीं जाएगी तो उसका इलाज कैसे होगा। कई लोगों को यह कहते सुना है कि डाक्टर के पास जाएंगे तो न जाने क्या निकाल दे। अरे, भाई निकलेगा, तो वही जो आपके शरीर में होगा। डाक्टर कोई अपने पास से तो कुछ नहीं निकाल देगा। अक्सर डाक्टर के पास हम तब जाते हैं, जब मर्ज बिगड़ चुका होता है। बेहतर है कि पहले ही चले जाएं जिससे न खुद तकलीफ पाएं और न दूसरों को दें। स्विट्ज़रलैंड के लोगों के बारे में बताया जाता है कि वे और कोई भी अप्वाइंटमेंट मिस कर सकते हैं मगर डाक्टर का अप्वाइंटमेंट कभी नहीं छोड़ते। इसका कारण यह है कि एक तो डाक्टर से टाइम देर से मिल पाता है, दूसरे वे हर हाल में स्वस्थ रहना चाहते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि उनका जीवन खुद उनके ही भरोसे है।

क्षमा शर्मा

बीमारी के कारण मुझे पांच दिन के लिए अस्पताल में भी भर्ती होना पड़ा। वहां मेरे कमरे में एक बुजुर्ग महिला थीं। जिनके पांव में बहुत चोट लगी थी। दूसरी बीमारियां भी थीं मगर जो भी नर्स या अस्पताल का कोई भी कर्मचारी उनके पास आता वह सबके साथ मिलकर खूब खिलखिलाती थीं, जैसे कुछ हुआ ही न हो। उनकी उम्र भी नब्बे के आसपास रही होगी। वह अपने घर जल्दी से जल्दी जाना चाहती थीं क्योंकि उन्हें अपनी बिल्ली की याद आ रही थी। अपनी बिल्ली का फोटो भी उन्होंने लगाया हुआ था। वह पूरे समय हंसती थीं और मैं उनकी हंसी को सुन चकित होती थी। जबकि इतने दिनों में शायद ही उनका कोई नाते-रिश्तेदार मिलने आया होगा।

काश! हम भी ये सीख पाते।

टेक्स का चोर ठेकेदार आखिर कब होगा सलाखों के पीछे...?

माही की गूंज, शुजालपुर।
अजय राज केवट

विगत माह से विभिन्न विभिन्न समाचार पत्रों की सुर्खियों के केंद्र बिंदु में रहने वाला खनिज ठेकेदार शक्तिसिंह राठौर अब भी सर्प की भांति अपनी दो मुंही रणनीति से बाज नहीं आ रहा है। टेक्स चोरी करने के लिए रोज नित नए-नए हथकंडों को अपनाकर एक ही रॉयल्टी रशीद के आधार पर जिले से बाहर खनिजो का आवागमन सुचारू रूप से संचालित करवा कर रोजाना लाखो रुपए के राजस्व की चोरी करवाकर अपना खजाना भर रहा है। ऐसा नही है कि, बंदरबाट के ईस खेल में अकेला ठेकेदार ही मलाई मार कर अपना पेट भर रहा है। टेक्स चोरी वाले बंदर बाट के ईस मलाई वाले खेल में खनिज विभाग की इंस्पेक्टर कामना गौतम से लेकर और भी कई आला अधिकारी शामिल हैं जो अपने देशभक्ति जनसेवा के सिद्धांत को ताक पर रखकर रोजाना मध्यप्रदेश शासन को लाखो रुपए का चूना लगाकर अपना घर भर रहे है।

ठेकेदार ने कार्यवाही के लिए बना रखी है छुटभईए गुंडों की लंबी-चौड़ी फ़ौज

वैसे तो आमतौर पर अवैध उत्खनन का परिवहन करने वाले वाहनो पर जिले का खनिज विभाग कार्यवाही करता है। लेकिन अब शहर में आमतौर पर यह देखा जा रहा है कि, विभाग की गैर मौजूदगी में ठेकेदार शक्तिसिंह खुद अपने छूटभईये गुंडों को साथ लेकर कार्यवाही करने के लिए निकल पड़ता है और अवैध उत्खनन करने वाले रेत ट्रैक्टरों को रुकवाकर वाहन मालिकों पर अपनी दहशत जमाकर लाखो रूपए वसूल लेता है। और तो और कुछ विश्वशनीय सूत्र तो यहा तक बताते है कि, अवैध उत्खनन की वसूली से प्राप्त धन का कुछ अंश खनिज स्पैक्टर कामना गौतम को भी दे दिया जाता है, ताकि वह अपने बैईमान मुंह पर पट्टी बांधकर रख सके और बैईमानी के ईस गौरखधंधे की खबर उच्च अधिकारियों को न जाने दे।

ठेका निर्धारण के बाद से धरती की सीना छलनी करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहा शक्तिसिंह

जैसे ही खनिजो के आवागमन पर रॉयल्टी निर्धारण का अधिकार शक्तिसिंह को प्राप्त हुआ उसी के बाद से ठेकेदार दिन दूनी रात चौगुनी गति से अपनी असवेंधानिक इच्छाओ की प्राप्ति करने में लगा हुआ है। दोगुनी रफ्तार से धरती का सीना छलनी करके रोजाना लाखो रूपए के राजस्व की चोरी कर दो नंबरी रास्ते से जिले से बाहर खनिजो को भेज रहा है अगर उच्च अधिकारियों द्वारा जल्द ही घूसखोर खनिज स्पैक्टर कामना गौतम व इसके मुंहबोले भाई ठेकेदार शक्तिसिंह राठौर पर लगाम नहीं गई तो भविष्य में मध्यप्रदेश शासन को इसके दुष्परिणाम भुगतने पड़ सकते है।

ठेकेदारों के कर्मचारियों पर क्यों नहीं होती 34/2 की कार्रवाई या मिला जुला है खेल...?

मोटे कमीशन के चक्कर में घूसखोर सुरेश पटेल करता है दो नंबरी कार्य

माही की गूंज, शुजालपुर।

शहर से लेकर जिलेभर में जहरीली शराब के विक्रय का गोरखधंधा अपने जोरो पर चल रहा है जिसमे अधिकारी भी अपने तयशुदा कमीशन के चक्कर में आखमूंद कुंभकरण की नींद सोए हुए है। या यू कहे अपने खुद के सानिध्य तले ही शहरभर में जहरीली शराब का वितरण आगे रहकर करवा रहे हैं। पैसे फेंका तमाशा देखे का सिद्धांत देशभक्ति जनसेवा के सिद्धांत पर इस कदर भारी पड़ रहा है कि, मानो आम नागरिकों का बाहुमुल्य जीवन इसके आगे तुच्छ सा प्रतीत हो रहा है। आज ठेकेदारों द्वारा शहर से लेकर गांव-गांव ढाणी-ढाणी में अपने गुर्गों के माध्यम से जहरीली शराब का वितरण करवाया जा रहा है और एसआई सुरेश पटेल जैसे कमीशन खोर विभाग के अधिकारी मानो कमीशन के चक्कर में ही अपने मुंह पर ताला मारकर बैठे हुए है। ठेकेदारों पर कार्यवाही के नाम पर आज भी भात के दो पात ही नजर आ रहे है। अब यह देखना दिलचस्प होगा की खबर प्रकाशन के बाद कुंभकरण की नींद में सोया आबकारी विभाग आखिर कब जागकर ईन जैसे कमीशन खोर अधिकारियो पर कार्यवाही करके शय और मात के ईस खेल को समाप्त करता है।

शहर से सटे समस्त ग्रामो में डायरियो के आधार पर करवाया जाता है जहरीली शराब का विक्रय

ठेकेदारों और विभाग के अधीकारियो द्वारा गठजोड़ बनाकर शहर व आसपास के समस्त गावो में डाईरियो के माध्यम से शराब का विक्रय करवाया जाता है। जिसमे ठेका संचालित मदिरा के साथ दो नंबरी जहरीली मदिरा को भी रख दिया जाता है जिससे की मदिरा सेवन करने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह पहचानना मुश्किल हो जाता है कि, कौनसी मदिरा स्वास्थ्य के लिए सही है और कौनसी नही। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सूत्र यहां तक बताते है कि, एसआई सुरेश पटेल ठेकेदारों के कार्यालयों में बैठकर जहरीली शराब के विक्रय का निर्धारण पहले ही कर देता है। जिससे की आने वाला कमीशन बराबर मात्रा में निरंतर मिल सके व जिलास्तर से ठेकेदार पर होने वाली अकस्मात कार्यवाही से ठेकेदार को बचाया जा सके।

कही एसआई सुरेश पटेल उज्जैन जैसी घटना दोहराने की फिराक में तो नहीं

जिस तरह विगत वर्ष पूर्व उज्जैन में जहरीली शराब पीने से कई निर्दोष व्यक्तियों की मौत हो गई थी। जिसमे जांच के बाद कई विभागीय कर्मचारियों की संलिप्तता का पता चला था व उन पर प्रशासनिक गाज गिरी थी। लेकिन अब ऐसा लगने लगा है कि, एसआई सुरेश पटेल की कमीशन खोरी व अक्रमण्यता के चलते कही वापस उज्जैन जैसी घटना कही शाजापुर में न दोहराई जा सके। जिसके लक्षण फिलहाल दिखाई भी पड़ने लग रहे है।

ठेकेदार के कर्मचारियों पर क्यों नही 34/2 की कार्यवाही

शुजालपुर से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में गाड़ियों के माध्यम से हर एक-एक गांव में ठेकेदार के कर्मचारियों द्वारा बोलेरो वाहन मै दर्जनों शराब की पेटी रख कर ग्रामीण क्षेत्रों में डायरिया के माध्यम से बिकवाते है। मगर मगर सब स्पेक्टर सुरेश पटेल को कुछ लेना देना ही नही है। आखिर किस संरक्षण के चलते ठेकेदार के आदमियों पर 34/2 का केस सुरेश पटेल किस मजबूरी में नहीं बनाते हैं या पैसों के दम पर यह भी आम जनता के मुंह पर चर्चा का विषय बना हुआ।

ढाबों संचालको पर भी क्यों नही कार्यवाही

शहर में इन दिनों ढाबा संचालक नियमो को ताक पर रख कर रात 1 बजे तक तक मय खाना सजाए रखते है। मगर आबकारी अधिकारी मोटे कमीशन के चक्कर में गहरी नींद सो रहे जिससे शहर में आए दिन कई प्रकार की घटनाएं हो रही है।

भाजपा संगठन में बंसीलाल गुर्जर ने निभाए अनेक दायित्व, अब लड़ेंगे राज्यसभा चुनाव

माही की गूंज, मंदसौर।

मंदसौर से सटे ग्राम लालघाटी के मूल निवासी बंसीलाल गुर्जर को भाजपा ने राज्यसभा उम्मीदवार बनाया है। गुर्जर अभी भाजपा भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और हुडको डायरेक्टर हैं। 60 वर्षीय गुर्जर वर्षों से संगठन के विभिन्न पदों पर काम कर रहे हैं। वे भाजपा के जिलाध्यक्ष से लेकर प्रदेश महामंत्री, भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष भी रहे हैं। इसके अलावा किसान मोर्चा में ही लंबे समय से काम कर रहे हैं।

पार्टी के आदेश मध्य प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, गुजरात सहित अन्य प्रदेशों में लगातार चुनाव से लेकर संगठन के कार्यों में लगे रहते हैं। 2020 में जब भाजपा की तरफ से तीन राज्यसभा उम्मीदवारों की घोषणा हुई थी तब भी अंतिम समय पर बंशीलाल गुर्जर की जगह कविता पाटीदार को उम्मीदवार घोषित किया गया था।

इसके बाद अब पार्टी ने बंशीलाल गुर्जर को उम्मीदवार बनाया है। गुर्जर मंदसौर मंडी अध्यक्ष भी रहे हैं। उनकी पत्नी रमादेवी गुर्जर मंडी अध्यक्ष, जनपद पंचायत अध्यक्ष रही है और अभी नगर पालिका अध्यक्ष हैं।

सड़क जाम करने वाले 3 लोगों पर पुलिस ने किया मामला दर्ज

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले के सीतामऊ थाने के बेलारा गांव में मंगलवार की सुबह सड़क जाम के मामले में पुलिस ने 3 लोगों पर धारा 147, 341 में प्रकरण दर्ज किया है। मंगलवार को सुबह ग्रामीणों द्वारा रोड जाम किया था जिसके कारण यात्रियों ओर परीक्षार्थियों को परेशानी का सामना करना पड़ा था। बता दें कि, कुछ दिन पूर्व ही किसानों ने बिजली की समस्या को लेकर बेलारा में सुवासरा सीतामऊ मार्ग पर चक्काजाम कर प्रर्दशन किया था। जिसके बाद सीतामऊ थाना प्रभारी दिनेश प्रजापति सहित बिजली विभाग के अधिकारीयों ने मौके पर समझाइश देकर मामला शांत किया था। वहीं मंगलवार को फिर गांव में पेयजल की समस्या को लेकर ग्रामीणों ने सड़क जाम कर दी और जिससे काफी देर तक आवागमन बाधित रहा। वहीं मौके पर थाना प्रभारी दिनेश प्रजापति ने जाकर सड़क पर प्रर्दशन कर रहे लोगों को हटाया। इसी के चलते थाना प्रभारी सीतामऊ द्वारा तीन लोगों पर कार्यवाही की गई है ताकि आगे से लोग अपना विरोध दर्ज कराने के लिए सड़क जाम करने जैसी हरकत ना करें।

डोडाचूरा का अवैध परिवहन करने वाले आरोपियों को दस वर्ष का सश्रम कारावास

माही की गूंज, मंदसौर।

विशेष न्यायाधीश एनडीपीएस एक्ट मंदसौर द्वारा आरोपीगणों को डोडाचूरा के अवैध परिवहन के मामले में 10-10 वर्ष के कारावास व एक-एक लाख के जुर्माने से दंडित किया है।अभियोजन मीडिया सेल प्रभारी दीपक जमरा ने बताया कि 11 दिसम्बर 2015 को चौकी दलौदा के निरीक्षक ओ.एल.बारिया को मुखबिर की सूचना पर अमलावद निरधारी रोड की तरफ से आती हुई कार दिखी थी। जिसकी तलाशी लेने पर पुलिस को कार की पीछे की सीट पर 02 सफेद रंग के प्लास्टिक के बोरे भरे हुए मिले थे। दोनों बोरों का मुंह खोलकर चेक किये जाने पर उनके अंदर मादक पदार्थ डोडाचूरा होना पाया गया था। न्यायालय द्वारा अभियोजन द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य एवं तर्कों से सहमत होकर आरोपीगण को दोषसिद्ध किया।

सडकों पर घूमने वाले आवारा मवेशियों को लेकर न्यायालय ने लिया संज्ञान

माही की गूंज, मंदसौर।

शहर की सड़कों पर घूमने वाले आवारा मवेशियों को हटाने के मामले में मुख्य नगरपालिका अधिकारी मंदसौर के खिलाफ 24 जुलाई 2023 को नगर के अधिवक्ता विनोद सालवी द्वारा अवमानना याचिका पेश की गई थी। जिसकी सुनवाई मंगलवार को न्यायालय में हुई।

न्यायालय ने मुख्य नगर पालिका अधिकारी से आवारा मवेशी हटाने के संबंध में पशु मालिकों के विरूद्ध परिवाद पेश करने और आवारा मवेशी हटाने के सबंध में जानकारी चाही थी। जिस पर मुख्य नगरपालिका अधिकारी मंदसौर द्वारा औपचारिकता निभाते हुऐ मात्र 2000 रूपये की जुर्माना रसीद और मिश्रीलाल ग्वाला, हैदर शाह, सुमित हिनवार के विरूद्ध न्यायिक मजिस्ट्रेट मंदसौर में पशु क्रूरता अधिनियम के तहत् परिवाद पेश करने और आवारा मवेशी सड़कों पर से हटाने के लिए पूर्व में नियुक्त दरोगाओं की सूची और नाम मात्र मवेशी पकड़ते हुऐ फोटोग्राफ्स पेश किये हैं। आवारा मवेशियों को पकडने के संबंध में अखबारों की कटिंग पेश की है। वहीं अधिवक्ता सालवी द्वारा न्यायालय में नगरपालिका द्वारा शहर से एकत्रित कचरा डालने वाले स्थान जो न्यायालय रोड़ पर किले के नीचे स्थित है पर 30 से अधिक मवेशियों के कचरे में से गंदगी खाते हुऐ फोटो ग्राफ्स पेश किये हैं।

ज्ञात हो कि, आवारा मवेशियों की संख्या अभी सड़कों पर देखने को मिलती है और न्यायालय में अवमानना याचिका प्रस्तुत होने के पश्चात् भी न्यायालय की कार्यवाही से बचने के लिए औपचारिकता पूर्वक आवारा मवेशी हटाने की कार्यवाही की जा रही है। आये दिन मवेशियों से हादसे की जानकारी प्राप्त हो रही है। इससे पूर्व न्यायालय की कार्यवाही में साक्ष्य के रूप में सुरेन्द्रसिंह सिसोदिया एडव्होकेट, अजय सिखवाल एडव्होकेट द्वारा सड़कों पर आवारा मवेशी घूमने के संबंध में शपथ पत्र एवं जयवर्धन गुप्ता एडव्होकेट ने आवारा मवेशी सड़कों पर घूमते हुऐ 65 बी साक्ष्य अधिनियम के प्रमाण पत्र सहित सीडी प्रस्तुत की है। मंगलवार को हुई सुनवाई में न्यायालय में नगरपालिका द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों पर अंतिम बहस हेतु 28 मार्च 2024 तारीख नियत की है।

अव्यवस्थाओं से परेशान एकलव्य आवासीय स्कूल के विद्यार्थी उतरे सड़क पर

माही की गूंज, बड़वानी।

जिले में एक बार फिर एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय की अव्यवस्था की पोल खुलकर सामने आई है। यहां पर विद्यार्थियों को सुविधाएं नहीं मिलने एवं खराब व्यवस्थाओं के चलते विद्यार्थियों का आक्रोश झलका। विद्यार्थी सड़क पर उतरे और करीब 12 किमी पैदल चले। सड़क पर उतरे विद्यार्थियों को मनाने अधिकारी भी दौड़े और उनकी बात सुनी और मान मनौव्वल कर उन्हें वापस पहुंचाया।

दरअसल, पाटी के एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने विरोध किया। यहां पर मूलभूत सुविधाएं नहीं मिलने के साथ स्टाफ पर अभद्रता करने के आरोप लगाए गए। पाटी के आवासीय स्कूल से करीब 200 विद्यार्थी कलेक्टर से शिकायत करने के लिए पैदल बड़वानी के लिए निकल पड़े।

करीब 12 किमी पैदल चलने के बाद बड़वानी एसडीएम शक्तिसिंह चौहान, बीईओ राजश्री पवार, तहसीलदार भूपेंद्र भीड़े, प्राचार्य एमएस खान और टीआई रोहित पाटीदार अंजराड़ा के पास पहुंचे। वहां पर विद्यार्थियों की समस्या सुनकर उन्हें स्कूल भेजा।

विद्यार्थियों ने बताया, उन्हें मूलभूत सुविधाएं नहीं मिल रही है। भोजन खराब गुणवत्ता का दिया जा रहा है। छात्रवृत्ति नहीं मिली है। स्टाफ अभद्रता करता है। इसके चलते पूरे स्टाफ को बदला जाए। एसडीएम ने विद्यार्थियों को सात दिन के अंदर जांच कर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। एसडीएम ने विद्यार्थियों को सात दिन में जांच कर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। गौरतलब है कि बीते माह में भी निवाली क्षेत्र के एकलव्य आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने इसी तरह पैदल चलकर विरोध प्रदर्शन किया था।

आदिम जाति कल्याण विभाग के सहायक आयुक्त विवेक गुप्ता ने बताया कि, पाटी के विद्यार्थियों की शिकायत मिली है। बच्चों के लिए जो बेहतर होगा वह जिला प्रशासन व विभाग द्वारा पूरा किया जाएगा।

कांग्रेस ने जिला अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह राठौड़ को हटाया

माही की गूंज, बड़वानी।

मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने बड़वानी के जिला अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह राठौड़ को पद से हटा दिया है। इसके बाद से ही राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं का बाजार गर्म है। यह कहा जा रहा है कि, कांग्रेस के जिला अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी ज्वाइन कर सकते हैं। हालांकि कांग्रेस उन्हें पद से हटाने के कई कारण गिना रही है। मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव के दौरान दल बदल के कई बड़े मामले सामने आ चुके हैं।

यह सिलसिला लोकसभा चुनाव के पहले भी थमने का नाम नहीं ले रहा है। मध्य प्रदेश में लगातार दल-बदल के मामले सामने आ रहे हैं। इसी बीच कांग्रेस के बड़वानी जिला अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह राठौड़ को हटाए जाने का मामला भी सुर्खियां बटोर रहा है। मध्य प्रदेश के कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष प्रभारी राजीव सिंह ने एक पत्र जारी करते हुए वीरेंद्र सिंह राठौड़ को हटा दिया है। उन्होंने पत्र में इस बात का भी हवाला दिया है कि, कांग्रेस के जिला अध्यक्ष लगातार मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आदेश के अवहेलना कर रहे थे। उनकी निष्क्रियता के चलते उन्हें अध्यक्ष जीतू पटवारी की अनुशंसा पर हटाया जा रहा है।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मीडिया प्रभारी केके मिश्रा ने एबीपी न्यूज से चर्चा के दौरान कहा कि, वीरेंद्र सिंह राठौड़ विधानसभा चुनाव के पहले से ही निष्क्रिय थे। उन्हें बार-बार चेतावनी दी जा रही थी, इसके बावजूद उन्होंने अपनी कार्य शैली नहीं बदली। इसी के चलते अध्यक्ष ने उन्हें हटा दिया है। आमतौर पर यह देखने में आ रहा है कि कांग्रेस से कई नेता बीजेपी में शामिल हो रहे हैं। बड़वानी के जिला अध्यक्ष को लेकर भी इसी चर्चा का बाजार गर्म है।

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता राजपाल सिंह सिसोदिया के मुताबिक विधानसभा चुनाव के परिणाम से प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नेताओं में अभी भी बौखलाहट है। कांग्रेस में किसी को भी बाहर कर देने का पुराना रिवाज है। अभी लोकसभा चुनाव के पहले और भी कई चौंकाने वाले पत्र जारी हो सकते हैं. भाजपा शुरू से ही सबका साथ सबका विकास के नारे पर काम कर रही है।

फोटो 1 क्र 232

पिता बना हैवान, रिश्ते हुए तार-तार

माही की गूंज, खरगोन। सौतेले पिता ने नाबालिग पुत्री को ही हवस का शिकार बनाया। पिता जान से मारने दी धमकी देकर लगातार दुष्कर्म कर रहा था। किसी ने देखा और मां को जानकारी दी। इसके बाद मामले का खुलासा हुआ। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार किया है।

थाना प्रभारी प्रीतम सिंह ठाकुर ने बताया कि, 35 वर्षीय आरोपित ने डरा धमकाकर चार दिन से एकांत व झाड़ियों में ले जाकर दुष्कर्म करता था। साथ ही जान से मारने की धमकी भी देता था। शनिवार को किसी परिचित ने दुष्कर्म करते हए देख लिया। इसके बाद जानकारी नाबालिग की मां को दी गई।

मां ने पुत्री से पूछा तो उन्होंने रोते हुए पूरी घटना बताई। इसके बाद थाने में शिकायत दर्ज कराई। थाना प्रभारी ने बताया कि, आरोपित मूल रूप से खंडवा जिले के पुनासा तहसील क्षेत्र का रहने वाला है।वह दो माह से पत्नी व बेटी के साथ बड़वाह में रहकर मजदूरी करता था। उसकी शुरू से ही नाबालिग पर नियत खराब थी।मां काम पर जाती तो वह दुष्कर्म करता था। 10 वर्ष पहले महिला का पति छोड़कर चले गया था। इसके बाद महिला ने आरोपित से शादी की।

24 फरवरी को आयोजित होगा समाधान आपके द्वार शिविर

माही की गूंज, बड़वानी।

राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर एवं तथा आनंद कुमार तिवारी प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशन में 24 फरवरी को समाधान आपके द्वार योजना अंतर्गत शिविर का आयोजन समस्त तहसील मुख्यालय सहित नगर निकायों में किया जायेगा। उक्त शिविर में न्यायालयों में लंबित राजीनामा योग्य प्रकरणों के साथ-साथ राजस्व विभाग, पुलिस विभाग, विद्युत विभाग एवं वन विभाग, नगर पालिका के लंबित एवं प्रीलिटिगेशन प्रकरणों का निराकरण किया जायेगा।

शिविर का उद्देश्य विवाद के प्रारंभिक बिन्दु पर ही समझौते योग्य प्रकरणों को ग्रामीण स्तर पर ही निराकरण करना है। लोक अदालत की सफलता के लिए प्रत्येक विभाग के कर्मचारियों एवं अधिकारियों की टीम तीन स्तरों पर गठित की गई है। जिनके द्वारा मामलो की पहचान व समीक्षा की जाएगी।

जिलेवासी उक्त शिविर में अपने-अपने राजीनामा योग्य लंबित एवं प्रीलिटिगेशन प्रकरणो का निराकरण आपसी सहमति के आधार पर जिला मुख्यालय बडवानी एवं तहसील स्तर पर करा सकते है।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत 23 कन्याओं का हुआ विवाह

माही की गूंज, बड़वानी।

प्रदेश में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना प्रारंभ करके प्रदेश की सरकार ने गरीब माता-पिता के बेटियों के विवाह की चिंता को खत्म कर दिया है। अब माता-पिता को बेटी के विवाह की कोई चिंता नही होती है, क्योकि उन्हे विश्वास है कि उनकी बेटी का विवाह मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में हो जायेगा। योजनान्तर्गत मिलने वाली 49 हजार रुपये की राशि से बेटियां अपनी मर्जी अनुसार गृहस्थी बसा सकती है।

राज्यसभा सांसद डॉ. सुमरेसिंह सोलंकी ने उक्त बाते कृषि उपज मण्डी बड़वानी में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत हुए सामूहिक विवाह समारोह के दौरान कन्याओं को आर्शीवाद देते हुए कही। इस दौरान राज्यसभा सांसद डॉ. सुमेरसिंह सोलंकी एवं जिला पंचायत अध्यक्ष बलवंतसिंह पटेल ने कन्याओं को 49 हजार रुपए की राशि का चेक का वितरण कर सुखी दाम्पत्य जीवन का आर्शीवाद भी दिया।

कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद डॉ. सुमेरसिंह सोलंकी एवं जिला पंचायत अध्यक्ष बलवंतसिंह पटेल, सांसद प्रतिनिधि भागीरथ कुशवाह, जनप्रतिनिधि पप्पू पटेल एवं भूपेन्द्र गोयल, सामाजिक न्याय विभाग के सहायक संचालक रौनक सहित वर-वधु के परिजन उपस्थित थे।

बेटिया ना पहले किसी से कम थी और न अब

माही की गूंज, बड़वानी।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश आनंद कुमार तिवारी के आदेशानुसार तथा सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मानवेंद्र पंवार के निर्देशन में शासकीय कन्या बालिका आश्रम सिलावद में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया।

जिसमें मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सीता कन्नौजे के द्वारा समझाया कि, बेटीया समृद्ध राष्ट्र की आधारशिला है। शिक्षा संस्कार के साथ लड़कियां सुपोषण पर भी ध्यान दें। बालिकाओं को बताया जीवन में ईमानदारी ही सर्वश्रेष्ठ नीति को अपना कर आगे बढ़े। कभी भी गलत काम ना करें, ना होने दे। मन लगाकर पढ़ाई करें। जीवन मे करियर को महत्व दें। बालिकाओं को बताया कि हमारे साथ यदि दुर्व्यवहार, छेड़छाड़ हो तो तत्काल अपने टीचर या घर पर माता-पिता को जरूर बताएं। यदि आपके साथ कोई घटना घटित होती है तो छुपाये नहीं। जीवन में मेहनत लगन से हर काम करें। दिनचर्या व्यवस्थित बनाए तथा पढ़ाई पर विशेष ध्यान दें। जिला विधिक सहायता अधिकारी दिलीप सिंह मुजाल्दे के द्वारा विधिक सेवा प्राधिकरण की योजनाओं की जानकारी दी गई। निःशुल्क विधिक सहायता, शिक्षा का अधिकार अधिनियम ,पोक्सो एक्ट की जानकारी से अवगत कराया गया। परामर्श केंद्र की काउंसलर/ पैरालीगल वालेंटियर अनीता चोयल के द्वारा बालिकाओं को गुड टच बेड टच की जानकारी दी। इस अवसर पर अधीक्षका और स्टाफ तथा बच्चियों मौजूद थे।

सुरक्षा सैनिक एवं सुरक्षा सुपरवाइजर भर्ती कैंप में 42 युवाओं का चयन

माही की गूंज, धार।

भारतीय सुरक्षा दस्ता परिषद नई दिल्ली व भारत सरकार पसारा एक्ट 2005 के अंतर्गत एवं मध्यप्रदेश डे राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन धार के सहयोग से सिक्योरिटी स्किल काउंसलिंग इंडिया लिमिटेड के द्वारा ग्रामीण व शहरी शिक्षित बेरोजगार नव युवकों को सुरक्षा सैनिक के पद पर भर्ती कैंप का आयोजन मंगलवार को जनपद पंचायत धार मे किया गया। जिसमें 97 शिक्षित बेरोजगार अभ्यार्थियों ने अपना पंजीयन करवाया। इसमें से एस आई एस इंडिया लिमिटेड नीमच के वरिष्ठ भर्ती अधिकारी सुरेन्द्र कुमार के मापदंड के अनुसार 42 यूवाओ का चयन हुआ। चयनित युवाओं को नीमच में एक माह के प्रशिक्षण उपरांत 65 वर्ष तक की स्थाई नोकरी दी जाएगी। जिसमें औद्योगिक क्षेत्रों में जैसे धार का किला, दिल्ली का लाल किला, ग्वालियर का किला, झांसी का किला, खजुराहो का मंदिर, सांची स्तूप, आगरा का ताजमहल, एसबीआई बैंक, आईडीबीआई बैंक आदि में दी जावेंगी। यह कैंप आजीविका मिशन के विकासखंड प्रबंधक दीप्ति वीरकर, रेखा राठौड़, सुमन ठाकुर के सहयोग से संपन्न हुआ।

माही की गूंज
बेबाकी के साथ..सच
एजेंसी देना है
झाबुआ जिले में
रंभापुर, मदरानी, झकनावदा, खवासा, राणापुर
अलीराजपुर जिले में
सौंडवा, कट्ठीवाड़ा, छकतला, चांदपुर, बोरी
संपर्क - 9589882798, 9981318651

लव अफेयर के चलते युवक को जंगल में ले गए दोस्त, फिर जो हुआ वो कर देगा हैरान

माही की गूंज, खरगोन।

जिले में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। यहाँ 3 युवाओं ने प्रेम प्रसंग में रंजिश के चलते अपने साथी युवक की जान ले ली। शख्स को जंगल ले जाकर कई बार चाकू घोंपकर की निर्मम हत्या की। क़त्ल कर शव को नहर में बहा दिया। अपराधियों ने साक्ष्य मिटाने के लिए कार में लगे खून के धब्बे भी धो दिए। पुलिस ने दो सगे भाइयों समेत 3 अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया है। अपराधियों के कब्जे से 3 मोबाइल, हत्या में उपयोग एक मोटरसाइकिल और एक कार की बरामद की गई है। अपराधियों को पुलिस ने 48 घंटे के अंदर गिरफ्तार कर लिया है। प्रेम प्रसंग की रंजिश की वजह से 19 वर्षीय गौतम ने अपने भाई और दोस्त के साथ मिलकर हत्या का षड्यंत्र रचा था।

जिला मुख्यालय से लगभग 40 किलोमीटर दूर कसरावद थाना क्षेत्र का यह मामला है। पिछली 10 फरवरी को गवला रोड के पास स्थित छोटी नहर में एक अज्ञात शख्स की लाश पड़ी हुई मिली थी। शरीर पर खून लगा होकर हाथ में कटा हुआ घाव नजर आ रहा था। लाश के पास में खून पडा हुआ नजर आया। पुलिस को शव के पास में एक नायलॉन की पतली रस्सी पड़ी हुई नजर आई। अज्ञात शव पर किसी तेज धारदार हथियार से कई हमले किए गए थे। पुलिस को प्रथमदृष्टया हत्या करना प्रतीत हुआ। मौके पर फोरेंसिक अफसर डॉ सुनिल मकवाना अपनी टीम के साथ तत्काल पहुंचे, उन्होंने अज्ञात घटना के तथ्यों को जोडकर सुराग लगाने में सहायता की।

पुलिस ने मृतक की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल कर क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों और अन्य महत्वपूर्ण लोगों से इस सिलसिले में मदद ली गई। पुलिस टीम ने अज्ञात लाश का पता मृतक आकाश बघेल (19) पिता भंवरसिंह बघेल निवासी उटावद को होना पाया। पुलिस ने सूचना तंत्र के आधार पर 19 वर्षीय गौतम पिता पूनमचंद जायसवाल ने अपने ही हमउम्र हेमेन्द्र पिता गणेश चौहान के साथ मिलकर आकाश से अपनी रंजिश का बदला लिया था। एक लोहे के धारदार छुरे एवं एक नायलॉन की रस्सी की सहायता से गौतम और हेमेंद्र ने आकाश का बेरहमी से क़त्ल कर दिया। पुलिस के मुताबिक, अपराधियोंने लाश को गवला के पास नहर में लाकर फेंक दिया। फिर कार में लगे खून को गौतम एवं भाई वासु ने साफ कर साक्ष्य मिटा दिए। अपराधियों की निशानदेही पर घटना में इस्तेमाल किया धारदार लोहे का छुरा और नायलॉन की रस्सी बरामद की गई। अपराधियों के खिलाफ धारा 201, 120 बी और 34 बढ़ाई गई है। फोटो 1 क्र 233

राज्य स्तरीय पंजा कुश्ती में जिले को मिले पदक

माही की गूंज, बड़वानी।

राज्य स्तरीय पंजा कुश्ती प्रतियोगिता भोपाल में अयोजित की गई। जिसमें बड़वानी जिले के 8 सदस्य दल ने अंतरराष्ट्रीय पंजा कुश्ती पहलवान मनोज पटेल के प्रतिनिधित्व में भाग लिया। जिसमें 5 खिलाडियों ने विभिन्न वजन वर्ग में अपना उच्च प्रदर्शन करते हुए बड़वानी जिले के लिये पदक प्राप्त किये। जिसमें मनोज पटेल रजत पदक, सुनीता काग स्वर्ण पदक, दीपिका खन्ना रजत पदक, सतीश ड़ावर रजत पदक व रजत सोलंकी कास्य पदक रहे। यह चयनित खिलाड़ी रास्ट्रीय पंजा कुस्ती प्रतियोगिता नागपुर (महाराष्ट्र) मे भाग लेंगे। खिलाड़ियों की इस उपलब्धि पर पुलिस अधीक्षक जिला बड़वानी, पुनीत गेहलोद ने हर्ष जताया खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाते हुए बधाई व शुभकामनाएं दी।

लोकसभा के मद्देनजर आयोजित हुई अंतर्राज्यी बॉर्डर मीटिंग

माही की गूंज, अलीराजपुर।

आगामी लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारी के संबंध में गुजरात राज्य के जिला दाहोद में सीमावर्ती राज्य गुजरात मध्य प्रदेश एवं राजस्थान के पुलिस अधिकारियों के मध्य अंतर राज्यीय समन्वय बैठक आहूत की गई। बैठक में आरवी आसरी उप पुलिस महानिरीक्षक गोधरा, डॉ. राजदीप सिंह झाला पुलिस अधीक्षक दाहोद, इम्तियाज शेख पुलिस अधीक्षक छोटा उदयपुर, अगम जैन पुलिस अधीक्षक झाबुआ, राजेश व्यास पुलिस अधीक्षक अलीराजपुर उपस्थित हुए तथा अभिजीत सिंह पुलिस अधीक्षक जिला बांसवाड़ा वर्चुअकली उपस्थित हुए।

बैठक में आगामी लोकसभा चुनाव 2024 को दृष्टिगत रखते बॉर्डर पर विशेष चेकिंग एवं निगरानी रखे जाने पर चर्चा की गई। साथ ही सभी जिले के पुलिस अधीक्षक द्वारा अपने-अपने अनुविभागीय पुलिस अधिकारी एवं थाना प्रभारी की सीमावर्ती अनुविभागी पुलिस अधिकारी एवं थाना प्रभारी की माह में एक बार बैठक आयोजित किए जाने की सहमति व्यक्त की गई। साथ ही सीमावर्ती क्षेत्र के दोनों राज्यों के गांव के बीट प्रभारियों को भी माह में एक बार बैठक आयोजित की जाकर विशेष नजर रखे जाने का निर्णय लिया गया। बैठक में स्थाई एवं फरारी वारंटी की धर-पकड़ हेतु विशेष अभियान चलाए जाने का निर्णय लिया गया। सभी पुलिस अधीक्षकों द्वारा अपने-अपने स्थाई-फरारी वारंटी की सूची का आदान-प्रदान किया गया।

बैठक में गुजरात, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के सीमावर्ती जिलों के पुलिस अधिकारियों का एक व्हाट्सएप ग्रुप जो पहले से क्रियाशील है उसे और अधिक गतिशील बनाए जाने का निर्णय लिया गया जिससे छोटी से छोटी घटना होने पर तत्काल सूचना प्राप्त हो सके। लोकसभा चुनाव 2024 के दौरान तीनों राज्यों के नाकाबंदी स्थलों पर सीसीटीवी कैमरा लगाए जाने का भी निर्णय लिया गया।

जब कोई बड़ा नहीं मिला तो बाल शिव भक्तों ने हेडपंप किया दुरुस्त

माही की गूंज, आम्बुआ।

आम्बुआ शिवालय प्रांगण में लगे हैंडपंप में किन्हीं तकनीकी कारणों से पानी लंबे समय के बाद आ रहा था कि, सूचना विभाग को देने के बाद मैकेनिक आए मगर उन्हें सहयोग करने वाला जब कोई नहीं मिला तो बाल शिव भक्तों ने अपना जोश दिखाया और हैंडपंप दुरुस्त करा दिया।

शिवालय स्थित हैंडपंप में विगत एक सप्ताह से पानी अधिक विलंब से आ रहा जिस कारण पूजा करने वाले परेशान हो रहे थे। तब इसकी सूचना पीएचई विभाग अलीराजपुर एसडीओ चौहान को दी गई जिन्होंने वहां से मैकेनिक भेज दिया। मगर यहां उन्हें सहयोग करने वाला कोई मिल नहीं रहा था। तभी वहां बाल शिव भक्त मंडल के तीन चार बच्चे आ गए और उन्होंने सहयोग करने की बात कही तथा मैकेनिक को सहयोग किया। जिस कारण हैंडपंप ठीक हो सका। हैंडपंप के पाइप खराब होने से दो पाइप निकालना पड़े आगामी ग्रीष्म ऋतु के पूर्व यहां पाइप बढ़ाना पड़ेंगे।

नीट की परीक्षा का इतना तनाव बड़ा कि 19 साल के छात्र ने खा लिया जहर

माही की गूंज, उज्जैन।

उज्जैन के ताजपुर में रहने वाला छात्र नीट की पढ़ाई कर रहा था और परीक्षा पास करने के तनाव में उसने जहर खा लिया था, जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। मंगलवार रात में छात्र की मौत हो गई। पुलिस ने परिजनों से पूछताछ की तो पता चला कि, तनाव में छात्र ने जान दी है। परिजनों के बयान लेने के बाद शव का पोस्टमार्टम करा लिया गया है।

पंवासा थाना पुलिस ने बताया कि, ताजपुर निवासी हर्षित पिता प्रकाश मालवीय (19) नीट की तैयारी कर रहा था। बताया जा रहा है कि उसने मंगलवार की दोपहर में जहर खा लिया, जिसके बाद उसकी हालत बिगड़ गई। परिवार के लोग उसे अस्पताल लेकर आए। छात्र के माता-पिता उज्जैन आए हुए थे। सूचना लगने के बाद परिजन उसे अस्पताल लेकर पहुंचे जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

पुलिस को दी गई सूचना

इधर, छात्र की मौत पर अस्पताल प्रबंधन ने इसकी सूचना पंवासा थाना में दी, जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लिया। परिजनों ने पुलिस को बताया कि, हर्षित नीट की तैयारी में जुटा था और परीक्षा पास करने को लेकर वह डिप्रेशन में चल रहा था। पुलिस ने बयान लेने के बाद शव का पोस्टमार्टम कराया और परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

पर्यावरण बचाने के लिए युवक ने शुरू की 21 राज्यों की अनोखी यात्रा

माही की गूंज, उज्जैन।

आशुतोष पांडेय, जो 2022 से पर्यावरण संरक्षण के लिए पदयात्रा कर रहे हैं, ने अब तक 14 महीने में 13 राज्यों की सैर की है और इस दौरान 10800 किलोमीटर की यात्रा की है। इसके साथ ही उन्होंने विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों, पर्यावरण मंत्रियों, और कलेक्टरों से मिलकर वृक्षारोपण का समर्थन किया है। वहीं इस दौरान उन्होंने उज्जैन कलेक्टर से मुलाकात कर वृक्षारोपण किया।

उज्जैन में पर्यावरण से संबंधित क्रियाएं

मंगलवार को उज्जैन में आशुतोष पांडेय ने शहर के पर्यावरण सचेतना कार्यक्रम में भाग लेकर मुहीम में जुटे मित्रों के साथ मुलाकात की और फिर वन अधिकारी के साथ मिलकर प्लांटेशन किया। वहीं इसके बाद, उन्होंने बताया कि उनका लक्ष्य पूरे देश में 16 हजार किलोमीटर तक पदयात्रा करके पर्यावरण को बचाना है।

उज्जैन के बाद, अब आशुतोष पांडेय भोपाल की ओर रवाना होंगे, जहां उन्हें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मिलकर पर्यावरण से जुड़ी बातचीत करने का एक अवसर मिलेगा। आशुतोष ने अपनी यात्रा के दौरान राज्यपाल और अन्य स्थानीय नेताओं से मुलाकातें की हैं और उन्हें अपने प्रयासों के बारे में सूचित किया है।

2025 में समाप्त होगी यात्रा

आशुतोष ने बताया कि उनकी यह यात्रा का लक्ष्य 2025 में पूरा होगा, जिसमें उन्होंने पूरे देश में 1 लाख वृक्षारोपण करने का निर्णय लिया है। इस प्रयास के तहत, एक स्थान पर राम वाटिका नामक एक वन्दे भारत प्रकल्प को समर्थन दिया जाएगा।

बिजली विभाग की मनमानी से त्रस्त ग्रामीण

माही की गूंज, उदयगढ़।

अलीराजपुर जिले के ग्राम टेमाची, टोकरिया झिरण एवं कालुवाट विकासखण्ड उदयगढ़ के ग्रामवासीयो को समय पर बिजली की आपूर्ति नही की जा रही है, जिससे ग्रामीणों की फसलों को समय पर पानी नहीं मिल पा रहा है, ग्रामीणों की फसलो को काफी नुकसान हो रहा है। इस समस्या के समाधान हेतु ग्रामवासी कई बार मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी के जुनियर इंजीनियर को अवगत करा चुके है, लेकिन आज दिनाक तक ग्रामीणों की समस्या का कोई समाधान नही किया गया है। ग्रामीणों का कहना है, यदि कुछ दिनों तक ग्रामीणों को बिजली की आपूर्ति सही समय पर नहीं की गई तो उनकी फसल नष्ट हो जायेगी, जिससे ग्रामीणों का बहुत नुकसान होने तय है। इस समस्या के बारे में हम ग्रामीणों द्वारा मुख्य कार्यपालन यंत्री बैरागी को समस्या के बारे में पूर्व में भी अवगत कराया गया है इस विषय पर कोई समाधान नही किया गया है। गांव के सरपंच के माध्यम से उन्हें अनेकों बार अवगत कराया जा चुका है पर इस संबंध में कोई भी कारवाही नही हुई है।

बसंत पंचमी के अवसर पर महाकाल मंदिर में हुई विशेष भस्मारती

माही की गूंज, उज्जैन।

धर्म नगरी उज्जैन के महाकाल मंदिर में प्रत्येक त्यौहार सबसे पहले मनाने की परम्परा है। बुधवार सुबह चार बजे भस्मारती में बाबा महाकाल को पीले द्रव्य से स्नान कराया गया। इसके बाद पीले चंदन से आकर्षक श्रृंगार कर सरसों और गेंदे के पीले फूल अर्पित किए गए। बाबा को पीले वस्त्र पहनाकर विशेष आरती की गई और फिर पीले रंग की मिठाई का महा भोग लगाया गया।

बुधवार को महाकाल मंदिर में बसंत पंचमी पर्व का उत्साह साफ दिखाई दिया। आज पूजा के दौरान ज्यादातर श्रद्धालु और पुजारी जी पीले वस्त्र में दिखाई दिए। हिंदू कैलेंडर के अनुसार माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को देवी मां सरस्वती का प्राकट्य दिवस मनाया जाता है।

हिंदू पंचांग के अनुसार, माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मां सरस्वती प्रकट हुई थीं। इसलिए पंचमी तिथि को बसंत पंचमी के नाम से जाना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मां सरस्वती की पूजा विधि-विधान से करते हैं उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलती है। साथ ही हर कार्य सफल होते हैं।

बता दें कि, बसंत पंचमी का त्योहार पूरे भारत में सरस्वती पूजा के नाम से जाना जाता है। साथ ही इस दिन मां सरस्वती को प्रसन्न करने के लिए लोग माता की विधि-विधान से पूजा करते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, कला और संगीत की देवी मां सरस्वती अपने भक्तों को विद्या और बुद्धि प्रदान करती हैं।

किसानों ने खेतों में लगाए कैमरे, घर से भी रख रहे फसल पर नजर

छिंदवाड़ा।

छिंदवाड़ा में लहसुन उत्पादक किसान बेहद खुश हैं, क्योंकि किसानों का लहसुन खेतों से ही 300 रुपये किलो के हिसाब से जगह पर ही थोक व्यापारी खरीद रहे हैं और यही लहसुन बाजार में 400 रुपये किलो बाजार में बिक रहा है। इस बार किसानों को लहसुन से करोड़ो रुपये का फायदा हो रहा है। चौंकाने वाली बात यह है कि लहसुन की फसल की देखरेख के लिए खेतो में किसानों ने सीसीटीवी कैमरे लगा दिए हैं। नजर रखी जा रही है कि लहसुन की कोई चोरी तो नहीं कर रहा।

जिले के सांवरी गांव पोनार निवासी युवा किसान राहुल देशमुख आधुनिक खेती करते हैं। उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से खेती कर करोड़ों रुपए का मुनाफा कमाया है। उन्होंने पहली बार अपने खेतों में लहसुन लगाया है और उसकी देखरेख के लिए सीसीटीवी कैमरे लगवाए हैं।

युवा किसान राहुल का कहना है कि, सीसीटीवी के माध्यम से मजदूर काम करते दिखाई देते हैं। लहसुन महंगा है। चोरी का डर है, इसलिए भी कैमरे लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि आजकल तो सोलर वाला सीसीटीवी कैमरा आ गया है। इसमें बिजली की भी जरूरत नही होती।

किसान राहुल ने बताया, मेरे खेत में पहले चोरी भी हुई थी, उसके बाद कैमरे लगाए गए। मैंने 13 एकड़ में लहसुन की फसल लगाई। फायदा 1 करोड़ से ऊपर है और 25 लाख रुपये की लागत लगी है। लहसुन बिकने के लिए हैदराबाद जा रहा है।

राहुल ने बताया कि, उनके पास कुल 35 एकड़ की खेती है। उसमें 16 एकड़ में टमाटर और 2 एकड़ में शिमला मिर्च, 13 एकड़ में लहसुन की फसल उगती है। मुख्य फसल लहसुन ही है। राहुल का कहना है कि जिस साल लहसून महंगा रहता है, उसी समय लहसुन लगाते हैं। जून में लहसुन के रेट ज्यादा हैं तो ही हम लगाते हैं। जमीन को भी रेस्ट चाहिए. एक ही जगह पर बार बार लहसुन नहीं लगता। आने वाले साल में भी लहसुन महंगा ही रहेगा।

बता दें कि, युवा किसान राहुल ने पॉलीहाउस बनाया है। यहां पर वह मिर्च और टमाटर के पौधे तैयार कर अन्य किसानों को बेचते हैं। इससे उनकी अच्छी खासी आमदनी हो रही है। राहुल का टमाटर का काम भी रेगुलर चलता है। उनके पास 150 मजदूर काम करते हैं।

डबल इंजन की सरकार: यहां भी है वहां भी

विगत दस वर्षों से भारतीय राजनीति में कई नवगढ़ित शब्दों ने राजनैतिक शब्दावली में अपनी जगह बनाई है। ऐसा ही एक शब्द है डबल इंजन की सरकार । यानी जिस दल की केंद्र में सरकार उसी दल की सरकार का राज्य में भी होना। और यदि डबल इंजन की सरकार बन भी जाये तो भी सत्ताधीशों की हवस यहीं ख़त्म नहीं होती। बल्कि फिर यह ट्रिपल इंजन की सरकार की बात भी करने लग जाते हैं। यानी इनकी इच्छानुसार स्थानीय निकाय से लेकर दिल्ली की संसद तक हर जगह एक ही दल का परचम लहराये। हालांकि स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान जहाँ एक मज़बूत सरकार होती है वहीँ मज़बूत विपक्ष भी उस मज़बूत सरकार को नियंत्रित रखने के लिये ज़रूरी समझा जाता है। परन्तु 2014 में नरेंद्र मोदी के केंद्रीय सत्ता में आने के बाद विपक्ष विहीन लोकतंत्र स्थापित करने की कोशिश की जा रही है और राज्यों में यह माहौल पैदा किया जा रहा है कि केवल डबल इंजन की सरकार ही किसी राज्य को तरक़्क़ी के रास्ते पर ले जा सकती है। दुर्भाग्यवश ऐसी भी कई मिसालें हैं जहाँ भाजपा चुनाव परिणामों में तो कई राज्यों में सत्ता में नहीं आ सकी परन्तु उसने ख़रीद-फ़रोख़्त कर या डरा धमका कर या फिर लोभ लालच देकर यानी येन केन प्रकारेण डबल इंजन की अपनी सरकार बना डाली।

पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश के झाबुआ के गोपालपुरा में जनजातीय समुदाय के सम्मेलन को संबोधित करते हुये अनेक विकास परियोजनाओं का लोकार्पण किया व अनेक योजनाओं का शिलान्यास भी किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने जहां सरकार की अनेक योजनाओं का ज़िक्र किया वहीं उन्होंने बड़े गर्व के साथ यह भी बताया कि - मध्यप्रदेश देश के सामने सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है कि डबल इंजन की सरकार कैसे काम करती है। यहां एक अहम सवाल यह उठता है कि नरेंद्र मोदी स्वयं जब 2001 से लेकर प्रधानमंत्री बनने से पहले यानी 2014 तक गुजरात के मुख्यमंत्री थे उस दौरान उनके शुरुआती मुख्यमंत्रित्व काल में ही यानी 2004 तक ही केंद्र में अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व वाली एन डी ए सरकार सत्ता में थी। यह वही वाजपेई काल था जब 2002 के गुजरात नरसंहार के बाद वाजपेई ने मोदी को राजधर्म निभाने का उपदेश दिया था और गुजरात की बेलगाम हिंसा से आहत होकर कहा था कि मैं दुनिया को क्या मुंह दिखाऊंगा? जबकि उसके बाद 2014 तक यानी दस वर्षों तक तो केंद्र में कांग्रेस के नेतृत्व वाली यू पी ए सरकार सत्ता में थी। परन्तु नरेंद्र मोदी ने इसी दौरान गुजरात में वाइब्रेंट गुजरात और इन्वेस्टर्स मीट आयोजित किये तथा उद्योग व पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने का प्रयास किया। यहाँ तक कि गुजरात के उसी कथित विकास मॉडल को लेकर 2013 में चुनाव प्रचार के दौरान यह भी कहते सुने गये कि केंद्र में सत्ता में आने के बाद पूरे देश में गुजरात मॉडल लागू करेंगे।

गोया नरेंद्र मोदी के अनुसार गुजरात ने उनके कार्यकाल में ही विकास की अभूतपूर्व इबारत लिखी। सवाल यह कि जब राज्य में उस समय डबल इंजन की सरकार नहीं थी तो गुजरात का विकास बिना केंद्र सरकार के सहयोग के कैसे संभव हुआ ? दिल्ली व पंजाब सहित उड़ीसा,दक्षिण भारत व पूर्वोत्तर के कई राज्य इस समय भी ग़ैर भाजपाई सरकारें चला रहे हैं। क्या वहां विकास नहीं हो पा रहा ? और इस बात की भी क्या गारंटी है कि डबल इंजन की सरकार ही विकास कर सकती है ? यदि वे मध्य प्रदेश की सरकार को देश के सामने सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बताते हुये यह कहते हैं कि डबल इंजन की सरकार ही विकास का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बन सकती है तो उन्हें मणिपुर का भी उदाहरण ज़रूर देना चाहिये जहाँ डबल इंजन की भाजपा सरकार के रहते हुए ही वह सब कुछ हुआ जो स्वतंत्र भारत के इतिहास में अब तक किसी भी राज्य में नहीं हुआ। शायद छोटा व दूरस्थ पहाड़ी राज्य होने के नाते मणिपुर की हिंसा पर न ही प्रधानमंत्री ने कोई बयान दिया न ही राज्य के मुख्यमंत्री ने त्यागपत्र दिया ? वहां तो राज्य के भाजपाई मंत्रियों विधायकों संसद व अन्य भाजपा नेताओं के घरों तक को आग लगा दी गयी ? उस समय डबल इंजन की सरकार ने मूकदर्शक बने रहने के सिवा और कौन सा तीर मार दिया ?

इसी तरह उत्तरांचल में डबल इंजन की सरकार बनी है। वहां की हल्द्वानी की घटना सबके सामने है। हरियाणा में डबल इंजन की सरकार है, यहां भी मेवात के नूह क्षेत्र में कुछ माह पूर्व हुई भयंकर हिंसा और उसके बाद हुई इकतरफ़ा कार्रवाई व बुलडोज़र आतंक पूरे देश ने देखा। राजस्थान में कुछ दिनों पूर्व ही डबल इंजन की सरकार बनी है। वहां भी हिजाब से लेकर खाद्य सामग्री तक पर चर्चा शुरू हो गयी। उत्तर पदेश के मुख्य मंत्री को तो बुलडोज़र बाबा की उपाधि ही मिल चुकी। असम की डबल इंजन सरकार साम्प्रदायिकता को कैसे बढ़ावा दे रही है,सभी देख रहे हैं। गोया डबल इंजन की सरकार के रहते विकास हो या न हो परन्तु भाजपा का गुप्त साम्प्रदायिक एजेंडा ज़रूर लागू होने लगता है। कांग्रेस ने तो कभी भी इसतरह का ग़ैर लोकतान्त्रिक राजनैतिक विमर्श नहीं छेड़ा कि राज्य के विकास के लिये डबल इंजन की सरकार होनी ही ज़रूरी है ? परन्तु भाजपा के वरिष्ठतम नेताओं द्वारा प्रत्येक राज्यों के चुनाव के समय डबल इंजन की सरकार का राग अलापने का तो यही अर्थ है कि इन्हें क्षेत्रीय राजनीति,क्षेत्रीय राजनैतिक दलों व क्षेत्रीय हितों की फ़िक्र नहीं बल्कि अपने समग्र अघोषित एजेंडे को लागू करने के लिये ही डबल इंजन की सरकार का राग आलापने की ज़रूरत महसूस होती है। अन्यथा यदि केवल डबल इंजन की सरकार ही विकास की ज़मानत होती तो न गुजरात तरक़्क़ी करता न महाराष्ट्र न पंजाब व हरियाणा जैसे राज्य। लिहाज़ा बेहतर होता यदि प्रधानमंत्री केवल मध्य प्रदेश को ही डबल इंजन की सरकार के काम करने का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण न बताते बल्कि साथ ही डबल इंजन की सरकार की घोर विफलता के रूप में मणिपुर का भी नाम ज़रूर लेते क्योंकि डबल इंजन की सरकार तो यहां भी है वहाँ भी ?

निर्मल रानी

स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया को क्यों भूल गई भाजपा..?

जनजातीय सम्मेलन में नाम तक नही लिया गया दिवंगत श्री भूरिया का

माही की गूंज, झाबुआ। मुजम्मिल मंसुरी

11 फरवरी को जिला मुख्यालय के समीप भाजपा ने एक जनजातीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस आयोजन को लेकर खासी तैयारियां की गई थी। प्रदेश सरकार ने इस आयोजन को सफल बनाने के लिए पूरी ताकत झोंक दी थी। कारण यह था कि, इस जनजातीय सम्मेलन में शिरकत करने खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी झाबुआ आ रहे थे। प्रधानमंत्री मोदी के इस दौरे को राजनीतिक चश्में से अगर देखा जाए तो यह आयोजन जनजातीय सम्मेलन ना होकर राजनीतिक सम्मेलन ही माना जाएगा। राजनीतिक विशेषज्ञों ने इस आयोजन को लेकर कई तरह की टिप्पणीयां भी की। यह भी माना गया कि, झाबुआ में होने वाला यह जनजातीय सम्मेलन 2024 के लोकसभा चुनावों के प्रचार का आगाज है। मगर मंच से प्रधानमंत्री मोदी ने ''गुड़ खाए ओर गुलगुले से परहेज करे'' कहावत को चरितार्थ करते हुए कहा कि मैं यहां चुनाव प्रचार के लिए नहीं आया। लेकिन इसी मंच से अपने इसी भाषण में मोदी ने 370 सीटे जीतने का दावा भी कर दिया। साथ ही साथ कार्यकर्ताओं को इस 370 के आंकड़े को छूने का मंत्र भी दिया। कांग्रेस की जमकर खींचाई भी की। कुल मिलाकर जनजातीय सम्मेलन के इस मंच से लोकसभा चुनावों के प्रचार की शुरूआत हो चुकी है। भले ही प्रधानमंत्री मोदी ने मंच से इसे नकारा हो लेकिन आयोजन के बाद तमाम विशेषज्ञों ने इसे लोकसभा चुनाव के प्रचार का आगाज मान ही लिया है। इस आयोजन को लेकर काफी लंबे समय से भाजपा तैयारियों में जुटी हुई थी। सरकार के साथ-साथ पूरा जिला प्रशासन इस आयोजन को लेकर सतर्क दिखाई दिया। चूंकि यह आयोजन जनजातीय सम्मेलन के नाम से किया जा रहा था तो जनजातीय जन नायकों के बड़े-बड़े कार्टून सभा स्थल के आसपास लगाए गए।

आयोजन को लेकर भाजपा में इतना उत्साह था कि हर एक काम बहुत ही बारीकी से किया जाता देखा गया। जिला भाजपा संगठन के पदाधिकारियों में जैसे आयोजन स्थल के निरीक्षण की होड़ मची हुई थी। अनुशांसित संगठनों के पदाधिकारी भी इस तरह से लगे हुए थे कि मानों पूरे कार्यक्रम का बोझ उन्ही पर है। सभा स्थल के मौका मुआयना के साथ सेल्फी लेने की भी भरमार मची हुई थी। हर कोई अपना दम सोशल मीडिया पर दिखा रहा था। हालांकि ऐसे लोगों की स्थिति मात्र बेलगाड़ी के नीचे चलने वाले उस जीव जैसी थी जो यह समझता है कि बैलगाड़ी वह ही खींच रहा है। इस आयोजन की तैयारियों में लोकसभा क्षेत्र के दो मंत्रियों की भी दमदार भागीदारी रही। जिला प्रशासन ने सरकार के आदेशानुसार इस आयोजन को सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। प्रदेश सरकार, जिला भाजपा व जिला प्रशासन के यह प्रयास सफल हुए या नहीं यह तो नहीं कहा जा सकता।

जनजातीय सम्मेलन के नाम पर हुए इस आयोजन में तमाम तरह की तैयारियां की गई थी, लेकिन यहां एक बड़ी भूल प्रदेश सरकार, जिला भाजपा और जिला प्रशासन ने जरूर की है। अब यह भूल अनजाने में हुई या जानबूझ कर इस कृत्य को अंजाम दिया गया, यह नहीं कहा जा सकता। अगर अनजाने में भी यह गलती हुई है तो यह भाजपा संगठन व प्रदेश सरकार की बड़ी भूल मानी जा सकती है। झाबुआ जिले में आयोजित हुए इस जनजातीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी की शिरकत ने इसे और भी अहम कर दिया। जिस मंच पर जनजातीय समाज की बात हो रही थी असल में उस मंच पर सरकार, जिला भाजपा और प्रशासन ने जनजातीय समाज के एक बड़े नेता को सिरे से ही भुला दिया। अगर प्रदेश सरकार या सरकारी तंत्र इसे भूल भी गया था तो कम से कम जिला भाजपा संगठन को तो अपने नेता को याद करना था। मगर अफसोस कि जिला भाजपा भी अपने उस नेता को भूल गई जिसने जिले व लोकसभा क्षेत्र में भाजपा का परचम लहराते हुए भाजपा को यहां कदम जमाने की जगह दिलाई थी।

भाजपा व सरकार ने भले ही इस क्षेत्र में जनजातीय सम्मेलन के नाम पर एक बड़ा आयोजन कर लिया हो, लेकिन वे इस आयोजन में पूर्व सांसद स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया को सिरे से ही भूल गए। यह एक बड़ी विडम्बना भी है कि उनकी अपनी पुत्री वर्तमान सरकार में केबीनेट मंत्री के पद पर है, बावजूद इसके वे क्षेत्र के लोकप्रिय नेता व अपने पिता स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया को इस आयोजन में याद तक नहीं कर पाई। आयोजन स्थल व उसके आसपास कई जनजातीय नायकों, नेताओं, मंत्रियों, मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री के बड़े-बड़े कार्टून लगे दिखाई दिए, लेकिन कहीं भी क्षेत्र के असली आदिवासी नेता, जननायक, पैसा कानून के जनक, आदिवासियों के मसीहा माने जाने वाले पूर्व भाजपा सांसद स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया की कोई बड़ी तो क्या छोटी सी तस्वीर भी देखने को नहीं मिली। स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया के क्षेत्र में हुए इतने बड़े जनजातीय सम्मेलन में उनकी तस्वीर ना लगी ना सही लेकिन मंच से होने वाले संबोधनों में कहीं भी स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया का कोई जिक्र ना होना भाजपा पर बड़े सवाल खड़े करता नजर आ रहा है। मंच से होने वाले बाहरी नेताओं के संबोधन में दिलीपसिंह भूरिया को याद न करने से कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन जनजातीय मोर्चा के प्रदेशाध्यक्ष और इसी क्षेत्र के रहवासी, थांदला विधानसभा के पूर्व विधायक कलसिंह भाबर ने भी स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया को अपने संबोधन में याद नहीं किया। हालांकि वे अपने संबोधन में कुर्राटी लगाते दिखाई दिए और अब सोशल मीडिया पर इनके लोकसभा प्रत्याशी होने के कयास लगाए जा रहे है। इस आयोजन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी जनजातीय समुदाय को लंबे समय तक संबोधित किया लेकिन उन्होने भी स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया को एक भी बार याद नहीं किया।

भाजपा ने जिन संसदीय सीटों को साधने के लिए झाबुआ में आयोजन किया उनमें से स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट से पांच बार सांसद रहे। भूरिया ने सांसद रहते इस क्षेत्र और इस क्षेत्र से जुड़े जनजातीय समुदाय के लिए बहुत बड़े-बड़े काम किए है। जिस पैसा कानून का लाभ आज इस क्षेत्र का जनजातीय समुदाय उठा रहा है वह भी स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया की ही देन है। जिस समय इस आदिवासी बाहुल क्षेत्र में कांग्रेस का एक क्षत्र राज था और भाजपा को कोई जानता तक नहीं था, ऐसे समय में स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया ने इस क्षेत्र में भाजपा को काम करने के लिए कदम जमाने की जगह दी। अगर यह कहा जाए कि इस क्षेत्र में भाजपा के जनक भी स्वर्गीय दिलीपसिंह भूरिया ही थे तो यह गलत नहीं होगा। क्योंकि स्वर्गीय भूरिया के पहले इस क्षेत्र में भाजपा का कोई नाम लेवा भी नहीं था। मगर अफसोस कि 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव के प्रचार का आगाज उनके अपने क्षेत्र से हुआ और उन्हे ही भाजपा ने पूरी तरह से भुला दिया।

कहते है जो पेड़ अपनी जड़ों को भूल जाता है वह बहुत जल्दी सूख जाता है।

बड़े पुल से नीचे गिरा पिकअप वाहन

माही की गूंज, बनी। ऋषभ गुप्ता

मंगलवार-बुधवार रात्रि को लगभग 10 बजे एक पिकअप वाहन एमपी 45 जी 2995 रायपुरिया से बनी की ओर जा रहा थी। मगर रायपुरिया और बनी के मध्य स्थित खतरनाक मोड पर बड़े पुल से पिकअप वाहन नीचे गिर गया। जिसमें कोई जनहानि नहीं हुई।

ड्राइवर के बताएं अनुसार सामने से आ रहे बाइक सवार जो की शराब के नशे में धूत था जिसे बचाने के चक्कर में पिकअप वाहन पुल से नीचे जा गिरा। पिकअप चालक का कहना है कि, मैं उसे बचाने की कोशिष नहीं करता तो बड़ा हादसा हो सकता था।

आपको बता दे कि, उक्त पूल पर आए दिन हादसे होते रहते है मगर जिम्मेदार विभाग ने स्पीड ब्रेकर आज तक नहीं बनाएं। पूर्व में भी इस खतरनाक मोड़ पर कई दुर्घटना हो चुकी है। जिसके समाचार भी समय-समय पर प्रकाशित किया और स्पीडब्रेकर न होने से दुर्घटना होने की खबर भी चलाई गई। मगर पीडब्ल्यूडी विभाग कुंभकरण की नींद सोया हैं और इस कारण आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती है।

एएसआई व एसआई की हुई पदोन्नति

माही की गूंज, झाबुआ।

जिले में पांच एसआई व चार एएसआई की पदोन्नति हुई। 5 एसआई जिसमें खवासा चौकी प्रभारी रज्जतसिंह गणावा, पारा चौकी प्रभारी रमेश कोली, हरी नगर चौकी प्रभारी जगन्नाथ कनेश, कुंदनपुर चौकी प्रभारी मोहन सिंह सोलंकी तथा थांदला थाने पर पदस्थ पेमा भूरिया की पदोन्नति होकर तीन सितारे वरिष्ठ अधिकारियों ने लगाकर थाना निरीक्षक पद की पदोन्नति की गई। वहीं चार एएसआई को सहायक निरीक्षक के पद पर पदोन्नति वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने दो सितारे लगाकर पदोन्नत किया। जिसमें मेघनगर थाने पर पदस्थ संतोष गुप्ता,राणापुर थाने पर पदस्थ महेश भामदरे, उमरकोट चौकी पर पदस्थ गोविंद भामदरे आदि की पदोन्नति की गई। उक्त पदोन्नति पर साथी अधिकारी, अरिष्ठ अधिकारी, ईष्ट मित्र व परिवारजनो ने संबधित अधिकारी को बधाई दि व उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

मादक पदार्थों का बंदरगाह बना मेघनगर: स्कूल परिसरों के अंदर पहुंचा ''टोकन'' और ''पुड़िया''

पुलिसिया लापरवाही से नशे के खेरची और थोक विक्रेताओं के हौसले बुलंद, नशे की गिरफ्त में देश का भविष्य

माही की गूंज, झाबुआ।

कहने को नार्कोटिस ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक सब्सटेंसेस एक्ट एक कठोर कानून है और यह मादक पदार्थों के विक्रय,खरीदी, भंडारण, उपभोग, परिवहन को पूर्ण नियंत्रित करने के लिए बना है । मगर पुलिसिया लापरवाही और साठगांठ से मेघनगर सहित पूरे झाबुआ जिले में ये कठोर कानून और इसकी कठोर धाराएं मानो वर्तमान में पूर्ण शिथिल साबित हो रही है और मेघनगर सहित पूरे जिले में स्मैक,चरस, गांजा जैसे मादक पदार्थों की खरीदी, बिक्री,परिवहन सब धड़ल्ले से जारी है और दिन प्रतिदिन ये नशीले पदार्थ युवा वर्ग को अपने चंगुल में फसा कर शारीरिक और मानसिक तौर पर तो विकलांग बना ही रहे हैं साथ ही युवाओं को अपराधी भी बना रहे है। आलम ये है की अब तो 15-16 साल के लड़के भी इन नशीले पदार्थों के चंगुल में फस कर नशे के पैसों की जुगत के लिए घर सहित बाहर भी चोरी,लूट जैसे अपराधिक वारदातों को तो अंजाम दे रहें। नशे की इस लत में कई बार युवा इसके ओवर डोज से काल के गर्त में समा गए तो कई बार अपने साथियों की ही हत्या कर दे रहे हैं। पूर्व में भी नशे की इसी लत के खेल में जिले में कई माता-पिता के बच्चे खो चुके है। नशे के इस कारोबार से युवा वर्ग,परिवार,समाज और देश सब बर्बाद हो रहा है और ड्रग्स के आदि हो चुके अपने बच्चों को रोज अपनी आंखों के सामने तड़पता देख इन बच्चो के माता-पिता भी रोज रोज मर रहे हैं।

ड्रग तस्कर मंदसौर, रतलाम, राजस्थान से लाकर सप्लाई कर रहे पूरे जिले में ड्रग्स

ड्रग्स के ये थोक और खेरची विक्रेता मध्यप्रदेश के मंदसौर,रतलाम,कुशलगढ़ सहित आदि क्षेत्रों से स्मैक,चरस,गांजा,अफीम लाकर युवाओं को धड़ल्ले से बेच रहें हैं। जिसमें स्मैक,चरस की कीमत 600 रुपए प्रति/टोकन,पुड़िया होती है तो वही गांजा,अफीम 150 से 200 रुपए प्रति टोकन उपलब्ध करवाया जा रहा है। ये पूरा नेटवर्क मोबाइल और स्पॉट डिलीवरी दो तरीकों से ऑपरेट होता है। ग्राहक मोबाइल नंबर से संपर्क करते हैं और बड़ी मात्रा में डिलीवरी मेघनगर के रेलवे ओवर ब्रिज, गुजरपाड़ा रोड़, इंडस्ट्रियल एरिया, फुटतालाब इन जगहों पर की जाती है। जबकि ये ड्रग पेडलर शहर में भी टोकन और पुड़िया बिंदास घूम-घुम कर मोटरसाइकल से भी युवाओं को बेच रहे हैं।

कमजोर पुलिसिया कार्रवाई और साठगांठ ड्रग के इस कारोबार के फलने फूलने की मुख्य वजह

पुलिस अधीक्षक अगम जैन के आने के बाद निश्चित तौर पर ड्रग के इन थोक और खेरची सप्लायरों के खिलाफ

राणापुर, झाबुआ,पेटलवाद,थांदला सहित जिले में सभी जगह पर कार्रवाई हुई और ड्रग के इन माफियाओं के खिलाफ पुलिस अधीक्षक की मंशा भी सही नजर आती है। मगर जो ठोस कार्रवाई इनके खिलाफ होनी चाहिए और ड्रग्स के इन सप्लायरों की जड़ तक पहुचकर उनकी पूरी चेन को नेस्तेनाबूद किया जाना चाहिए लेकिन थाना प्रभारी और जांच अधिकारी मिलकर पानी फेर दे रहे हैं।

जांच अधिकारी, थाना प्रभारी, पुलिस अधीक्षक की मंशा पर पानी फेर करते है जांच में खेल

जैसे ही पुलिस किसी ड्रग्स के माफिया को पकड़ती है वैसे ही पुलिस जब्ती में सामान्य गांजा /चिलम की अल्प मात्रा दिखाकर एनडीपीइस एक्ट की धारा 8/21 के मामले को 8/27 में तब्दील कर देती है और दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 41 (ए) का नोटिस देकर आरोपी को छोड़ देती है। चाहे उसके पास से स्मैक ही क्यों ना जब्त किया हुआ हो लेकिन आर्थिक सांठगांठ कर स्मैक की जब्ती को चिलम गांजा की जब्ती दिखा दी जाती है। वही कई बार ज्यादा मात्रा में पकड़े ड्रग्स को भी आर्थिक साठगांठ कर आरोपी को दंड प्रक्रिया सहित की धारा 41(ए)के नोटिस का लाभ दे कर छोड़ने के लिए ड्रग्स की अल्प मात्रा बता दी जाती है। वही पुलिस पकड़े गए आरोपी से एनडीपीएस एक्ट की धारा 67 में ड्रग किस से खरीदा इस तरह पूरी ड्रग सप्लायरों की चेन की जानकारियां तो प्राप्त कर लेती है। लेकिन जांच अधिकारी केस डायरी में इस जानकारी का लिखित उल्लेख करने की बजाए इस जानकारी का उपयोग नाम लिए अन्य आरोपियों से आर्थिक हित साधने में कर लेता है। उन पर कोई करवाई नही की जाती। जबकि नियमानुसार नारकोटिक्स ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक सब्सटेंसेस एक्ट की धारा 42 में आरोपी को अरेस्ट करते ही धारा 67 में उस से माल कहां से खरीदा और किस-किस को बेचा की सारी जानकारियां प्राप्त की जानी चाहिए। साथ ही मोबाइल कॉल डिटेल ,वाट्सअप मैसेज से हर आरोपी तक पहुंचा जाना चाहिए। इस तर्ज पर पूछताछ की जाकर पूरी ड्रग्स सप्लायरों की सारी चेन को आरोपी बनाकर जेल भेजा जाना चाहिए। जिससे इन ड्रग माफियों में भय व्याप्त हो और नशे के इस कारोबार पर लगाम लगे। मगर किताबों में तो कानून कठोर है मगर धरातल पर धन के सामने उसका क्रियान्वन शून्य हो जाता है और ड्रग्स का ये साम्राज्य फलता फूलता जा रहा।

बचाव ही उपाय है अभिभावक,स्कूल प्रबंधन दे बच्चों पर ध्यान

माही की गूंज के सूत्रों के अनुसार ड्रग का ये जहर शहर की जानी-मानी स्कूलों के परिसरों के अंदर भी पहुंच चुका है। जिससे अभिभावकों और स्कूल प्रबंधन को चाहिए की वो बच्चो की दैनिक गतिविधियों पर निरंतर पैनी नजर रखे। साथ ही उनकी शारीरिक भाषा शैली और हावभाव पर भी नजर रखे। क्यों की ड्रग्स के इस जहर से बचाव ही एक मात्र उपाय है।

पुलिस अधीक्षक को करना चाहिए मोनिटरिंग

पुलिस अधीक्षक अगम जैन को चाहिए की नारकोटिक्स एक्ट में किसी आरोपी की गिफ्तारी होते ही अनुविभागीय अधिकारी(पुलिस) को तुरंत सक्रिय करते हुए आरोपी की गिरफ्तारी से लेकर पूछताछ और कोर्ट में आरोपी की जमानत के विरोध के तर्क और रिमांड मांगे जाने की पूरी पुलिसिया कार्रवाई पर पैनी नजर रखे। जिस से आर्थिक सांठगांठ ना हो और ड्रग्स के खेरची और थोक सभी सप्लायर उनकी सही जगह जेल पहुंचे ताकि ड्रग्स के ज़हर के इस कारोबार पर स्थाई रोक लग सके।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422